₹ २०

ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

ज्येष्ठ-आषाढ़ २०७७ मई-जून २०२०

तुम रक्षक काहू को डरना

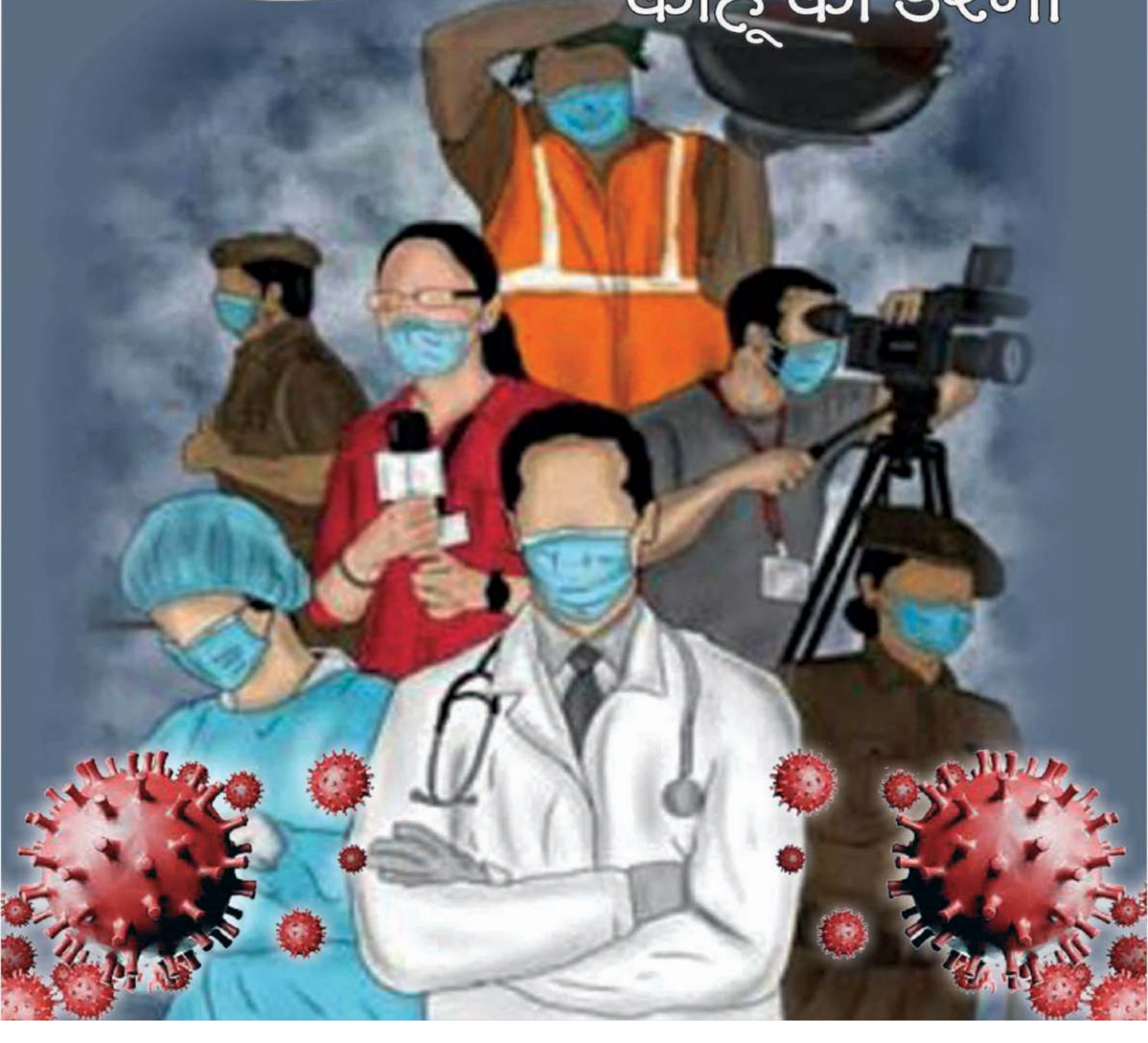

कोरोना

महायुद्ध सी महामारी ये,
जिसकानाम कोरोना.
सारी दुनिया कांपी इससे,
कहे हमें मारो ना.
पी.एम. सी. एम.सब समझाऐं
तुच्छ इसे समझो ना.
लॉकडाउन ही इसका हल है,
बिना वजह निकलो ना.
सावधान रहना है सबको,
है हाथों को धोना.
घर बैठे ही काम करो,
बाहर की सैर करो ना.
सोशल डिस्टेंसिंग से भइया,
दूर इसे रख लो ना.
क्यूंकि इसकी दवा नहीं,
ना पड़े किसी को खोना.

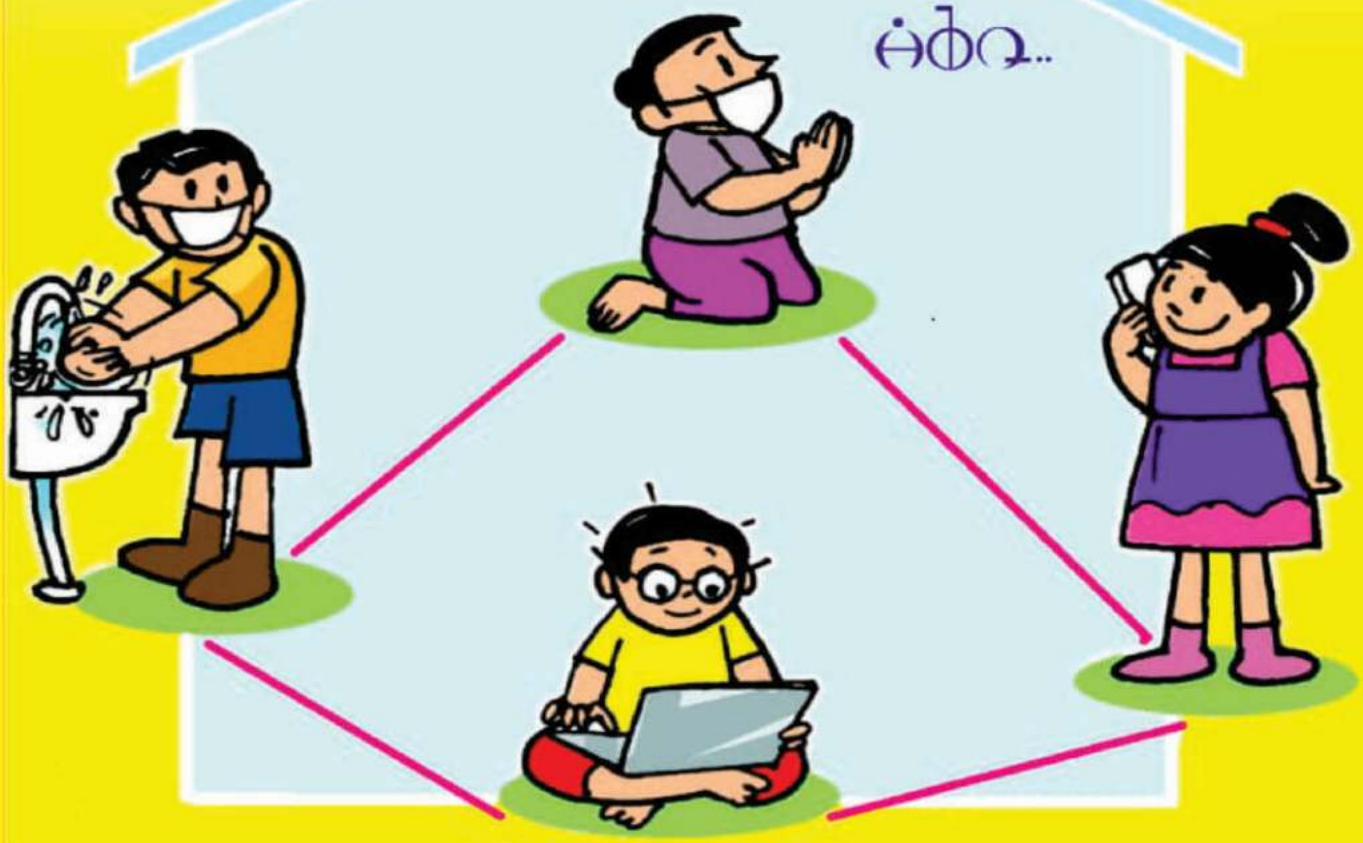

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

ज्येष्ठ-आषाढ	२०७७	वर्ष ४०
मई-जून	२०२०	अंक ११-१२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

यह अंक आप सबके हाथों में विलम्ब से पहुँच रहा है। इतना ही नहीं तो पूरे दो माह देश जिस ढंग से बन्द रहा उसके चलते हमें मई और जून माह का संयुक्त अंक प्रकाशित करना पड़ रहा है।

इस समय एक छोटे से कोरोना विषाणु ने जिस तरह पूरे विश्व को हिलाकर रख दिया है वह आप सब भी टी.वी. पर देख रहे होंगे। एक भय का वातावरण चारों और फैला हुआ है। शहर, गाँव, मोहल्ले और गलियाँ सुनसान हैं।

हम भारतीय अपने मिलनसारी स्वभाव के कारण ही जाने जाते हैं किन्तु इस मध्य वह सब कुछ छूट गया। अब हम सबको बिना डरे इस नई व्यवस्था को स्वीकारना होगा। विशेषकर आप बच्चों को अधिक सतर्क रहना होगा। पहले की तरह एक दूसरे के निकट आने, स्पर्श करने से बचना आवश्यक होगा। हाथ धोना, मास्क लगाना, यह सब अपनी आदत बनाना होगी। विद्यालय में शौचालय आदि के उपयोग के तुरंत बाद पानी डालना और साबुन से हाथ धोना यह याद से करने का अभ्यास बनाइए।

अभी विद्यालय कब खुलेंगे यह तो तय नहीं है परन्तु जब भी खुलें तब तक आप सबको अपनी दिनचर्या में आवश्यक परिवर्तन कर लेना होंगे। यह भी संभव है कि हम अपना भोजन का टिफिन साथ न ले जा सकें प्रारम्भ में। ले गए तो साथ खा न सकेंगे। पानी की अपनी बॉटल का उपयोग स्वयं ही करना होगा। पहले कि तरह एक दूसरे के भोजन और पानी में हिस्सा नहीं बाँट सकेंगे।

यह भी हो सकता है खेल के मैदान पर जाना न हो। गए तो खेल ऐसे खेलना होंगे जो दूरी बनाकर बगैर एक दूसरे को छुए खेलना पड़ें। आप कहेंगे मैं तो आपको डरा रहा हूँ परन्तु बच्चों! यही सत्य है कि जो सतर्क रहेगा वह बचा रहेगा।

बिना भयभीत हुए नई व्यवस्थाओं में ढल जाइए। यह सब भी अधिक समय का नहीं है। विज्ञान पर विश्वास रखें। हमारा कल फिर से उतना ही आत्मीय मिठास से भरा होगा जैसा पहले था।

सदैव स्वस्थ प्रसन्न रहने की शुभकामनाओं सहित...

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- शीशम का पेड़ - राजा चौरसिया १०
- दादाजी की कहावतें - सुषमा दुबे १८
- गुल्लक के पैसे - राजकुमार धर द्विवेदी २१
- रैंचो का घर - संजीव जायसवाल ३०
- लड्डू और पसीने का सच - इंजी. आशा शर्मा ३५
- साहसी रमन - नीरज कुमार मिश्रा ३८

लघु कहानी

- सफाई - शैलजा भट्ट २३
- टूट गया भरोसा - दिनेश विजयवर्गीय ३३

अनुवाद

- इच्छापूर्ति - मूल बंग्ला:रवीन्द्रनाथ ठाकुर - अनुवाद : मनीषा बनर्जी ०५
- नन्हा आलोचक - मूल बांग्ला:रवीन्द्रनाथ ठाकुर -अनुवाद : प्रणव कुमार सिंह ०८

कविता

- कोरोना - संकेत गोस्वामी ०२
- कितने सुन्दर हैं - कुसुम अग्रवाल ०९
- प्यारे बच्चे - कैलाश त्रिपाठी १९
- एक बीज की चाह - मेराज रजा ३४
- नींद परी - रामकरन ३७
- तिलचट्टा - श्रवण कुमार सेठ ४४
- कोरोना पंच - अरविन्द कुमार 'साहू' ४९
- फूल नहीं जाते स्कूल - ज्योत्सना प्रदीप ५०
- बाहर बढ़ा कोरोना - संकेत गोस्वामी ५१

लघु आलेख

- ऐसे मिली आइस्क्रीम - डॉ. हनुमान प्रसाद 'उत्तम' २७
- हाल हुआ बेहाल - तितिक्षा बसावा ४५

प्रसंग

- आत्मा की खेती - पूर्णिमा मित्रा १२

बाल प्रस्तुति

- अनार - कु. शांभवी गुप्ता ४०

चित्रकथा

- कैसा टेबलेट -देवांशु वत्स १३
- तब गर्मी नहीं लगती - देवांशु वत्स ४१

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की १४
- संस्कृति प्रश्नमाला १५
- यह देश है वीर जवानों का २०
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे २४
- स्वयं बने वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी २६
- विषय एक कल्पना अनेक
- यंत्र लोक से -प्रमोद सोनवानी २८
- दूर दूर से आता आम - केशरी प्रसाद पाण्डेय २८
- अप्पू हाथी -पुखराज सोलंकी २९
- हमारे राज्यवृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ३२
- आपकी पाती - ३४
- पुस्तक परिचय - ४२
- छः अंगुल मुस्कान - विष्णुप्रसाद चौहान ४३
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ४४
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी ४६

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

इच्छापूर्ति

मूल बांग्ला - गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अनुवाद - मनीषा बनर्जी

श्रीमान सुबलचंद्र के सुपुत्र का नाम था सुशीलचंद्र। किंतु नाम के अनुरूप गुण दोनों ही पिता पुत्र में नदारद थे। जहाँ सुबलचंद्र का शरीर कुछ दुर्बल सा था वहीं सुशीलचंदृ के कारनामों में सुशीलता का कोई नामोनिशान तक न था।

सुशील की करतूतों और पड़ोसियों की आए दिन शिकायतों से परेशान हो जब पिताजी उसे मारने दौड़ते तो उनके पैर का गठिया सताने लगता। इधर पिता को रौद्र रूप धारण कर अपनी ओर आते देख सुशील हिरण के समान कुलांचें मारते हुए ऑख से ओझल हो जाता था। परन्तु जब जब सुबलचंद्र के चंगुल में सुशीलचंद फंस जाता था तब तब कई दिनों के मैले कपड़ों की भाँति उसकी धुलाई में कोई कोर कसर नहीं रह जाती थी।

शनिवार के दिन हालाँकि दो बजे विद्यालय की छुट्टी हो जाती थी। मगर उस दिन न जाने क्यों सुशील का मन विद्यालय जाने के लिए तैयार ही नहीं हो रहा था। एक तो भूगोल की परीक्षा दूसरे पड़ोस में बोस बाबू के घर शाम को आतिशबाजी का शानदार आयोजन। सुबह से ही आतिशबाजी की तैयारियाँ जोर शोर से हो रही थी। मुझे कोई कमरे के अंदर जबरन बंद करके कैसे रख पाता?

उधर बाहर अकेले बैठे सुबलचंद्र सोचने लगे– ''मुझे माता पिता ने जरूरत से ज्यादा लाड़–प्यार दिया।

इस वजह से मेरी पढ़ाई लिखाई में ग्रहण लग गया। काश अगर मेरा बचपन फिर से लौट आता तो मैं बगैर समय गवाएं रात दिन केवल पढ़ाई करता रहता।''

तभी वहाँ से इच्छापूर्ति देवी गुजर रही थी। पिता पुत्र की तीव्र इच्छा और दयनीय दशा देखकर उनका मन पसीज उठा। पिता पुत्र दोनों को उन्होंने इच्छापूर्ति का वरदान देकर तथास्तु कहा और अंतर्ध्यान हो गईं। पिता–पुत्र तो मारे खुशी के दोनों हाथ उठाकर धम धम नाचने लगे।

अधेड़ सुबलचंद्र को उम्र की वजह से रात भर नींद नहीं आती थी। जब सुबह होने को आती थी तब कहीं उनकी आँख लगती थी। मगर आज पौ फटने के साथ ही सुबल बाबू कूद कर पलंग से जा उतरे। उन्होंने देखा कि उनका शरीर घटकर काफी छोटा हो गया है। मुँह में फिर से नए व झकझक सफेद दाँत आ गए है। दाढ़ी– मूँछ का तो चेहरे पर दूर–दूर तक कोई चिन्ह ही नहीं है। रात में पहने हुए कपड़े एकाएक काफी ढीले–ढाले व लंबे हो गए हैं।

इसके उलट हमारे सुशीलचंद्र जो पूरे मोहल्ले को विद्यालय भेजना पड़ता था। घर वापस आने पर बालरूप धारी सुबलचंद्र अपने पुत्र सुशीलचंद्र को बड़े मनोयोग से कृतिवास ओझा कृत रामायण पढ़ता देख झटपट बस्ता फेंक कूदफांद करने लगे। पिता के उत्पात को बंद करने के विचार से सुशील खूब कठिन गणित का प्रश्न एक स्लेट पर लिखकर उनको थमा आया। अगले दिन से उसने एक बेहद सख्त मास्टर जी को रात दस बजे तक गणित पढ़ाने के लिए घर पर बुला लिया।

खानपान के मामले में भी अब प्रौढ़ सुशील बेहद सख्ती बरतने लगा। उसने देखा था कि सामान्यतः पिताजी के भोजन ज्यादा खा लेने से बदहजमी हो जाया करती थी। इसलिए अब वह पिताजी को सीमित मात्रा में ही आहार दिया करता था। किन्तु बाल सुबलचंद्र जी बचपन और दाँत दोनों वापस पाते साथ ही भोजनभट्ट बन बैठे। उनका बस चले तो वे सारे महीने का राशन दो दिनों में ही सफाचट कर डालें। बेटे के कठोर अनुशासन की वजह से आधा पेट भोजन करने वाले पिता की जल्द ही अधमरों की सी हालत हो आई। किसी सख्त बीमारी का अनुमान कर पुत्र अब पिता को कड़वी दवा पिलाने लगा।

प्रौढ़ सुशील खुद भी अब पहले की तरह उठापटक नहीं करता वरन् घर वापस आकर सुशीलदेहरी पर गुमसुम होकर जा बैठा। वहाँ से नौकर को पुकारकर दुकान से एक रूपए की ढेर सारी 'लेमनजूस' लाने की बात कहीं। जब दुकान में रंगबिरंगी गोलियाँ आ गई तो सुशील ने फटाफट कई सारी गोलियाँ मुँह में डाली गोलियों का स्वाद भी भला कभी चखा जा सकता है? एक बारगी मन में आया कि पिताजी को ये सारी गोलियाँ दे दी जाएँ। लेकिन फिर इतनी सारी गोलियाँ खाकर पिताजी की तबियत बिगड़ जाने के डर से उसने अपने बालरूप धारी पिता को कुछ नहीं बताया।

रोज की तरह आज भी जब उसके मित्रों की टोली उसके घर खेलने के लिए बुलाने आई तो सुशील की कायापलट देखकर हक्की बक्की रह गई। उधर सुशील भी और दिनों के विपरीत आज अपने मित्रों को देखकर मन ही मन कुढ़ने लगा। उनके साथ न जाकर उसने उन्हें दरवाजे से ही चलता कर दिया।

पिछली रात को ही पूरे मनोयोग से पढ़ने लिखने की इच्छा जताने वाले सुबलचंद्र जी बचपन की वापसी के साथ ही विद्यालय जाने के नाम से ही उपद्रव मचाने लगे। बाल सुबलचंद्र को विद्यालय भेजने में पुत्र सुशील को अब पसीना आने लगा। किसी तरह ठेलठाल कर भेजा। आज सुबह होने के बाद

भी वे गाढ़ी नींद सो रहे थे।

पिता सुबलचंद्र के हो हल्ले की वजह से बड़े परेशान होकर जब सुशील खीझकर पलंग से उतरा तो उनकी कायापलट हो चुकी थी। उसका शरीर रातों रात बढ़ कर दोगुना हो चुका था। उसके कपड़े भी शरीर के अनुपात में बेहद तंग व छोटे हो गए थे। गाल व होंठों के ऊपर कच्ची पक्की दाढ़ी मूँछ व मुँह के भीतर आधे से अधिक दाँत नदारत। सिर पर हाथ फेरते ही सुशील को और एक झटका लगा। आधे गंजे सिर पर थोड़े बहुत सफेद काले बाल बड़ी बहादुरी के साथ डटे हुए थे।

बालक सुशील व उसके पिता दोनों की इच्छा तो पूर्ण हो गई परन्तु भारी मुश्किल आ खड़ी हुई थी। कहाँ तो सुशील सोचता था कि पिताजी की तरह बड़ा होकर वह जब चाहे पेड़ों पर चढ़ा करेगा, ताल तलैयों में तैरा करेगा, कच्चे आम खाएगा, खेत खलिहानों में बेरोक टोक घूमता फिरेगा लेकिन अब तो तालाब का पानी देखते ही बदन में कंपकंपी सी हो उठी। फिर भी जैसे तैसे उठकर पास के एक पेड़ पर चढ़ने की कोशिश में दोहरे बदन की वजह से धम से जमीन पर गिर पड़ा और लोग जमा होकर बूढ़े की बचकानी हरकत पर हो–हो कर हँसने लगे। शर्म से लाल होकर वह चुपचाप बैठ गया। परंतु पिताजी को सच बताने से थप्पड़ घूँसों का इनाम मिलना तयशुदा था। अतः एकाएक सुशील के पेट में जबर्दस्त मरोड़ उठने लगी। शय्याशायी (बिस्तर में पड़े) कराहते पुत्र को देख पिता की अनुभवी आँखों ने ताड़ लिया कि माजरा क्या है? उन्होंने सुशील को ऊपर से दिखावटी लाड़ करते हुए कहा– ''तुम्हारे लिए रंग बिरंगी मीठी 'लेमनजूस' लाया था। पर अब तुम उनकी बजाय पाचक द्रव्य पी कर आराम करो। बोस बाबू के घर भी हरि को अकेले ही भेज दूँगा।''

कड़वे पाचक द्रव्य के नाम से ही सुशील के रोंगटे खड़े हो गए। साथ ही आतिशबाजी देखने पर लगी रोक से उसका मन डूब गया। द्रव्य तैयार करके लाए तो पुत्र चटपट पलंग से उठकर विद्यालय जाने की बात कहने लगे। पर सुबलचंद्र ने धमकाकर सुशील को आराम करने के लिए कहा और बाहर आकर कमरे के दरवाजे की कुंडी लगा दी। अंदर पलंग पर पड़े सुशील की आँखों से झर–झर आँसू वह निकले। मन ही मन वह बोला–''अगर आज मैं पिताजी की उम्र का रहा होता तो मैं अपनी मर्जी का मालिक तो होता। बहुत अधिक खा पाता था न ही रात बेरात, बरसात पानी, ठंडी गर्मी में पूरे गाँव में अलमस्त विचरण कर पाता था। अब भी आदतन रधिया मौसी को घाट से मटकी भर कर आते हुए देख पत्थर मार कर मटकी फोड़ देता था तो लोग मारने दौड़ पड़ेगें। ''बूढ़े होकर भी बदमाशी करते हुए शर्म नहीं आती है क्या?''

बालक बने सुबलचंद्र आदत से मजबूर जब बड़े–बूढ़ों के साथ शतरंज खेलने चौपाल पर जा बैठते तो बूढ़े उन्हें लड़कों के साथ खेलने को कहकर भगा देते।

आखिरकार एक दिन दोनों ही पिता पुत्र ने इस बदलाव से तंग आकर इच्छापूर्ति देवी को मन ही मन स्मरण किया। जब वे प्रकट हुई तो दोनों ने ही अपना पुराना रूप वापस पाने की इच्छा जताई। ''तथास्तु! कल प्रातःकाल तुम दोनों अपने असली स्वरूप में लौट आओगे।'' वर देकर देवी अंतर्ध्यान हो गईं।

अगली सुबह उठकर सुबलचंद्र जी ने खुद को फिर से प्रौढ़ व सुशील को बाल रूप में देखा। दोनों को ही लगा कि वे कोई सपना देख रहे थे। पिता सुबलचंद्र ने आवाज को रौबदार बनाते हुए कहा– ''सुशील व्याकरण के नियम नहीं रटोगे क्या?''

सुशील सिर खुजलाते हुए अटक अटक कर बोला– ''पिताजी मेरी व्याकरण पुस्तिका कहीं खो गई है।''

(रवींद्रनाथ ठाकुर की बांग्ला बालकथा 'ईच्छापुरोन से अनुदित')

– नागपुर (महा.)

नन्हा आलोचक

रचना - रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनुवाद - प्रणवकुमार सिंह

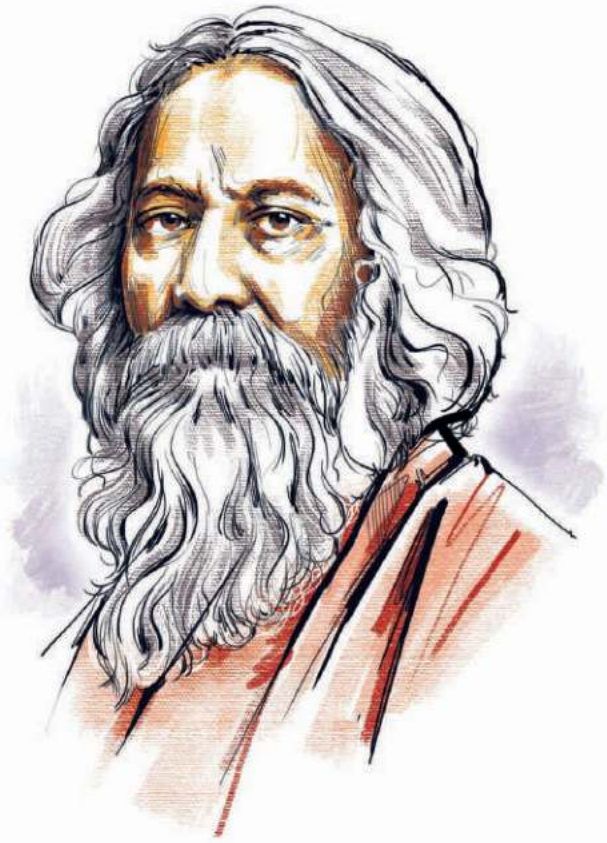

सन् १९०९ में प्रकाशित कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'शिशु' कविता संग्रह में एक कविता थी 'समालोचक'। इस कविता में कवि हृदय की तीव्र दृष्टि से एक अबोध बालक स्वयं की और अपने पिता के कार्य-कलापों को बताते हुए अपनी माँ से भोलेपन में पूछे गए कुछ प्रश्न हैं। बालमन को कचोटती इन बातों को बहुत ही सुन्दर शैली में दर्शाया गया है, मानों की कविगुरु नहीं, स्वयं कोई बालक अपनी माँ से अपने लेखक पिता के बारे में कह रहा हो। ठाकुर ने इस कविता का स्वयं अंग्रेजी में अनुवाद किया था, जो १९१३ में मैकमिलन एंड कम्पनी द्वारा प्रकाशित 'दी क्रेसेंट मून' में 'ऑथरशिप' के नाम से संकलित हुआ था। इस कविता का हिन्दी अनुवाद आपके समक्ष प्रस्तुत है।

बाबा क्या सब किताबें स्वयं लिखते हैं।
कुछ समझ नहीं आता, वे क्या लिखते हैं?
उस दिन जो तुम को पढकर सुना रहे थे,
सच-सच कहना, माँ, क्या तुम समझ पाई थी?
फिर ऐसा लिखकर
बोलो क्या होगा?
माँ तेरे मुँह जैसी बातें सुनता
बाबा वैसा क्यों नहीं लिख पाते?
क्या दादी ने कभी बाबा को
राजाओं की कहानियाँ नहीं सुनाई?
वह सब कहानियाँ
क्या भूल गए हैं बाबा?
नहाने में देर करते हैं-
तू बस उन्हें पुकारती रहती।
खाना परोस कर तो तुम बैठी ही रहती-
उन्हें तो यह याद ही नहीं रहता।
हर पहर वे करते हैं
लिखने-लिखने का खेल।
बाबा के कमरे जब मैं जाता करने खेल
तू मुझे कहती है, नटखट बालक
शोर मचाता तो डांट लगाती, कहती,
''देख नहीं रहे बाबा अपने कमरे में लिख रहे!''
बोलो तो, सच बोलना,
लिख कर क्या मिलता है?
जब मैं बाबा की कॉपी खींच कर
बैठ लिखता हूँ कलम दवात लेकर
क ख ग घ ङ ह य ब र
तू गुस्सा क्यों करती हैं, माँ जब मैं लिखता हूँ?
बाबा जब लिखते
कहानी-कोई नहीं देखता।
बड़े-बड़े कागज के पन्नों
को वे खराब करते हर दिन।
यदि मैं नाव बनाना चाहूँ
तब तू कहती कागज बरबाद नहीं करते।
सफेद कागज क्या काला
करना अच्छी बात हैं?

• नोएडा (उ.प्र.)

कितने सुंदर हैं तितली के पंख

कविता

कुसुम अग्रवाल

तितली रानी तितली रानी बड़े अनूठे पंख।
इन पंखों में भरे हुए हैं सुंदर सुंदर रंग।।
कुछ पीले हैं कुछ भूरे हैं कुछ है मटियाले से
कभी कभी तो ये लगते हैं बस काले काले से।
कभी कभी हो जाते हैं ये छह नैनों वाले से
रंग बदलते भी देखे कुछ हमने इनके संग।
तितली रानी तितली रानी बड़े अनूठे पंख।
इन पंखों में भरे हुए हैं सुंदर सुंदर रंग।।
पतले नाजुक पंख तेरे प्रोटीन से बने हैं
आर पार हम देख सकें ये इतने पतले हैं।
हाथ लगाने से डरते हैं छूते ही झड़ते हैं
जैसे हमसे डरते हो बड़े अजब है ढंग।
तितली रानी तितली रानी बड़े अनूठे पंख।
इन पंखों में भरे हुए है सुंदर सुंदर रंग।।
मिले धूप से शक्ति इनको वरना यह सो जाते
ये प्रकाश परिवर्तित करते रंग तभी दिखलाते
कई तरह के रंग पंख यह कुदरत से भी पाते
रंजक कई बनाती हो तुम कितने मस्त मलंग।
तितली रानी तितली रानी बड़े अनूठे पंख।
इन पंखों में भरे हुए है सुंदर सुंदर रंग।।

● कांकरोली (राजस्थान)

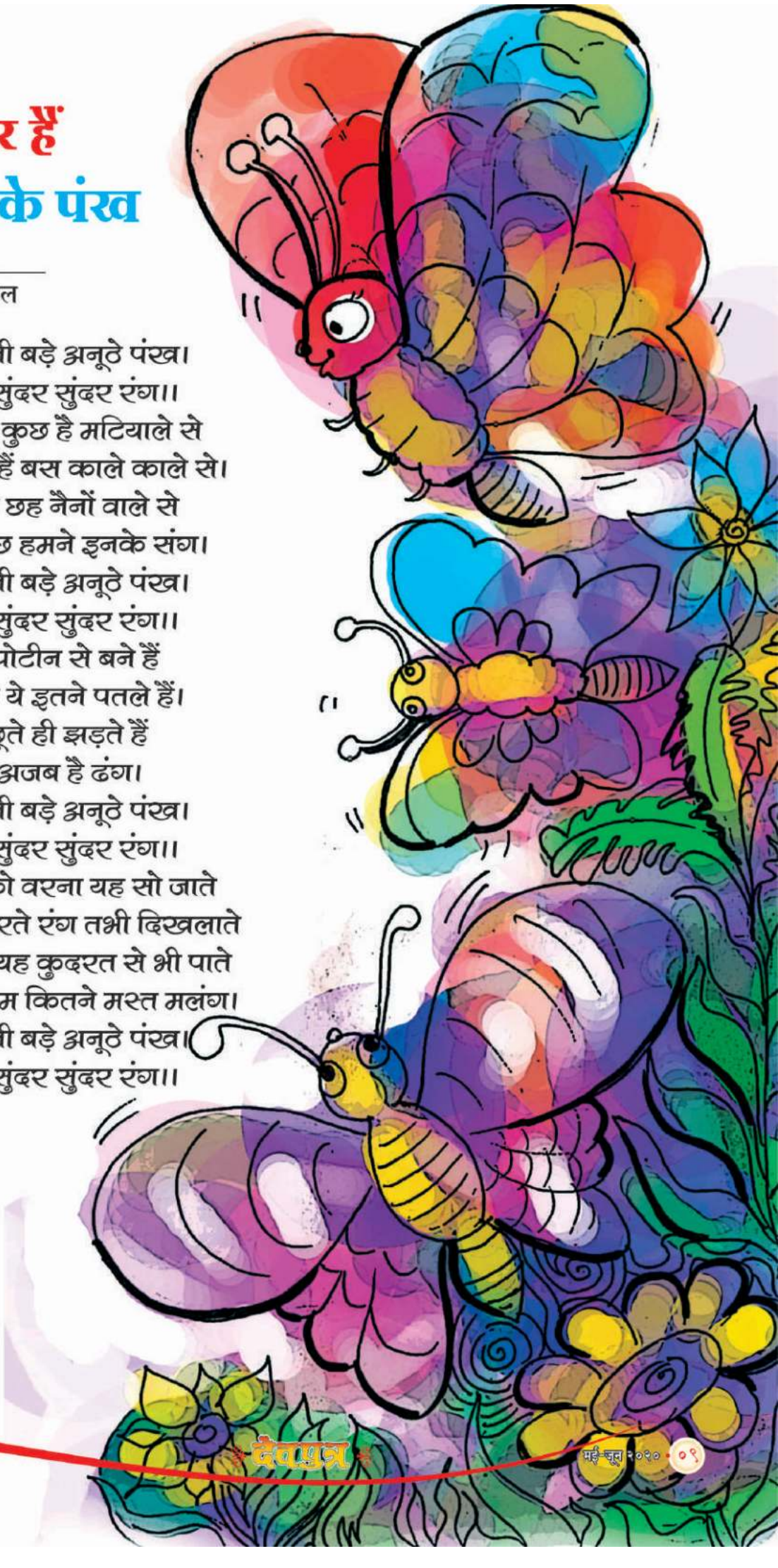

शीशम का पेड़

कहानी

राजा चौरसिया

कहानी बहुत पुरानी है। उस समय गाँव के लोग पेड़ों को रोज पूजते रहते थे। उन्हें साक्षात देवी–देवता कहते थे। जड़ से लेकर फुनगी और पत्तों तक में आस्था पुरखों के जमाने से चली आ रही थी। किसी गाँव में मोहन नाम का एक आदमी था जिसको पेड़ों में खटिया, पलंग, बल्ली, जलाऊ लकड़ी और फर्नीचर के अलावा कुछ भी नहीं दिखता था। वह बारह मास हरे–भरे झाड़ों को काटकर शहर में कमाई भी करता था। कुल्हाड़ी और तेज आरी चलाना उसका स्वभाव बन चुका था।

ग्रामवासी मोहन की खूब निंदा करते रहते थे लेकिन उसके सामने अपने मुँह में मानो दही जमाए रहते थे। कारण यह कि वे भोले भाले दब्बू किस्म के थे। इनके विपरीत मोहन दबंग बड़ा आदमी था।

एक दिन उसके समझदार इकलौते बेटे ने साहस बटोरकर कहा– ''मैंने सुना है कि पेड़–पौधे भी जीवनधारियों के समान हैं। ये भी भगवान की संतान हैं। आप इन्हें काटकर घोर पाप क्यों करते हैं? किसानी से ही काफी कमाई हो जाती है।''

मोहन तत्काल गरज पड़ा– ''तू सरासर बुद्धू है। भैंस से बड़ी यह अकल होती है। झाड़ हो या जंगल पहाड़, ये सभी केवल वस्तुएँ कहलाते हैं। तेरा नाम तो ज्ञानी है पर तू कितना अज्ञानी है।''

बेटा, नाम के अनुसार होशियार था। इसलिए वह यह सोचकर चुप रहा गया–''स्वार्थी आदमी दुष्ट होता है। ठोकरें खाने के बाद ही अंदर की आँखें खुलती हैं।''

गरमी के दिन थे। सूरज डूबते समय मोहन अपने खेत से लंबे डग भरता हुआ घर लौट रहा था। उसकी नजर एकदम दूर पहाड़ी पर खड़े एक भारी भरकम वृक्ष पर पड़ी। खजूर के पेड़ों से घिरे उस महा वृक्ष पर प्रायः सबकी नजर नहीं पहुँच पाती थी। वह उस झाड़ के करीब दौड़कर गया।'' अरे वाह! यह तो शीशम है। लकड़ियों में लोहा कहलाता है। मजबूती और खूबसूरती में सागौन से भी बढ़कर है। इस मस्त झाड़ में खूब कमाई हो सकती है। ऐसे सुखद विचार उसके मन में गिद्ध की तरह मँड़राते रहे। शाम का घुँघलका होते ही वह घर आया लेकिन उसकी आँखों में शीशम का बस वही झाड़ दिख रहा था। आखिर उसने अपने साथियों को लेकर उसे दूसरे दिन कटवाने का पक्का निश्चय कर लिया।

ज्ञानी यह सुनते ही रुआँसा हो गया था। सैकड़ों झाड़ों के बीच केवल एक ही शीशम का झाड़ था। उसने यह भी सुना था कि यह झाड़ औषधीय गुणों से भरपूर कहलाता है। इसके फलों को बंदर खाता है। तोते से भी ज्यादा गहरे और गाढ़े रंग की गुच्छेदार पत्तियाँ कान की झुमकियों जैसी मनमोहिनी लगती हैं आकाश में सूरज के बाँस भर चढ़ते ही गोकुल वहाँ पहुँच गया था।

वहाँ मोहन के इशारे पर मजदूर लोग पैनी कुल्हाड़ियों से बेचारे शीशम को काट रहे थे। वहाँ दूर एक खजूर के पेड़ पर चढ़ा ज्ञानी उस सुंदर पेड़ को काटते देखकर आहें भर रहा था।

कुल्हाड़ियों की मार और आवाज से पानी की तरह काँप रही डालियाँ मानों अपनी भाषा में चीख पुकार करती हुई कह रही थी– ''हमारे माता–पिता रूपी पेड़ को काहे काटे डाल रहे हो। इसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?'' शायद उनकी यह करुण पुकार कोई पत्थर भी सुन पाता तो वह जरूर पसीज जाता।

झाड़ के ऊपर चढ़े आदमी बड़ी निर्दयता से कटाई कर रहे थे। आरियाँ भी चलने लगी थीं। वह अति पुराना और विशाल वृक्ष टुकड़े–टुकड़े होने की कगार पर पहुँचने के समीप था।

दिनभर में पूरा वृक्ष काटकर बराबर कर दिया गया। वह केवल ठूंठ रह गया था। मोहन इस बार पर फूला नहीं समा रहा था कि अब तो उसकी चाँदी हो जाएगी। घर के

पिछवाड़े बैलगाड़ियों से ढोकर लाई गई लकड़ियों का भारी ढेर जो था। पेड़ के तने अर्थात धड़ के टुकड़े पड़े हुए थे।

एक सप्ताह के अंदर मोहन कई खेल ले जाकर बेचकर खूब कमाई करके आया तो उसे लगा जैसे गड़ा हुआ खजाना हाथ लग गया है। उसे सपने में भी ऐसा सुख सोचा तक नहीं था।

कुछ समय बाद मोहन पर तरह–तरह की बीमारियों का हमला शुरू हो गया। झाड़ फूँक से कोई लाभ नहीं मिला। दूर दूर वैद्य और गुनिया बुलवाने पर भी वह जर्जर होने लगा। बेचारी पत्नी चिंता के मारे सूखकर काँटा हुई जा रही थी। बेटा ज्ञानी सोच रहा था –'' यह उस पेड़ को काटने के पाप का ही बुरा नतीजा है। शीशम की आह जरूर लग सकती है।

मोहन कभी हट्टा कट्टा पहलवान कहलाता था। अब वह खाट पर असहाय पड़ा कराहता रहता था। बेटे से यह सब नहीं देखा जा रहा था। उसने भगवान से प्रार्थना करते हुए कहा– ''प्रभु जी ! उनकी गलती की सजा मुझे दे दो। पिता के बिना मैं जी नहीं सकता हूँ। जल्दी सद्‌बुद्धि प्रदान करो जिससे पश्चाताप हो जाए।''

संयोग की बात हुई कि मोहन को रात में सपना आया। शीशम के पेड़ की रोती–कलपती आत्मा कह रही थी– '' अगर तुम मुझे शांति देकर अपनी शांति प्राप्त करना चाहते हो तो मेरा नया परिवार बसाओ।''

उसने ज्ञानी को भी सपने के बारे में बताया। ज्ञानी को अहसास हो गया कि परमात्मा ने आत्मा की आवाज सुन ली है।

ज्ञानी सुन चुका था– ''खोदने से पानी निकलता है। खोजने से सब कुछ मिलता है।'' वह बड़ी लगन से अपने काम में जुट गया। बड़ी मुश्किल से मिले बीजों का रोपण शीशम के उस ठूँठ के चारों ओर कर वहाँ भी छिटक दिए जहाँ जमीन खाली पड़ी थी।

एक सप्ताह के भीतर लगभग सारे बीज अंकुरित हो गए।

यहाँ खाट पर लाचार पड़े मोहन के स्वास्थ्य में सुधार शुरु होने लगा। सुंदर सलोने और चिकने पत्ते हवा में लहराते हुए दूर से नजर आ रहे थे। मोहन बिना दवाओं

के चंगा हो रहा था।

''बेटा ! तुमने मेरा पाप उतारने का बड़ा अच्छा काम किया है। मैं अब उन पौधों के दर्शन करना चाहता हूँ।''

मोहन लाठी टेकता हुआ बेटे के साथ पौधों के पास पहुँच गया। वे पौधे ठूंठ को तेजी से ढँक रहे थे। वह हरा भरा दृश्य देखते ही उसकी आत्मा गद्‌गद हो गई – ''हे प्रभु! काटे गए पेड़ ने शायद क्षमा कर दिया है।'' पौधों की बढ़ोतरी के साथ उसके स्वास्थ्य में भी बढ़ोतरी होती जा रही थी। गाँव भर में यह चर्चा हवा की तरह फैल गई कि पेड़ भी जीवधारी हैं। वृक्षारोपण पुण्य है। उन्हें काटना पाप है। जरूरत पड़ने पर उनकी कटाई के बदले छँटाई करना ही उचित है। माँ बेटे ने जाकर पौधों को बार बार प्रणाम किया।

''अब मैं आखिरी सांस तक पेड़–पौधे लगाऊँगा। दवा से भी बड़ी प्रर्थना है। इस बात का बोध मुझे उस शीशम ने अच्छी तरह करा दिया है।'' यह सब देखकर ग्रामवासी भी खुशी के मारे फूले नही समा रहे थे।

– उमरियापान (म.प्र.)

आत्मा की खेती

प्रसंग

पूर्णिमा मित्रा

काशी में महात्मा बुद्ध एक कृषक के घर भिक्षा मांगने गए। कृषक ने उन्हें आपादमस्तक ताकते हुए विन्रमता से कहा, ''मैं परिश्रम से कृषि कर्म करके अपने और अपने परिवार का पेट भरता हूँ। आप स्वस्थ है और सज्जन भी, फिर भिक्षाटन करके पेट क्यों भरते हैं। मेहनत करके अपना पेट क्यों नहीं भरतें?'' तत्काल महात्मा बुद्ध समझ गए कि यह कृषक जिज्ञासु प्रवृत्ति का है। वे उसे समझाते हुए बोले, ''वत्स मैं भी एक कृषक ही हूँ।'' यह सुनकर किसान चौंका। वह आश्चर्यचकित स्वर में बोला ''कैसे? आपके खेत कहाँ है?''

महात्मा बुद्ध शांत स्वर में बोले ''मेरी खेती आत्मा की है। मैं ज्ञान के हल से श्रद्धा के बीज बोता हूँ। तप के जल, श्रद्धा के बीज को सिंचित करता हूँ। विनय मेरे हल का हत्था और विवेक फल और मन कसी है। इस खेती से दुःख संताप की अनुभूति नहीं होती।''

महात्मा बुद्ध का आशय समझ में आते ही वह कृषक उन का शिष्य बन गया।

– बीकानेर (राज.)

कैसा टैबलेट

चित्रः देवांशु वत्स
कथाः अरविंद कु. साहू

मदारी

शिवाजी महाराज छत्रपति हो गये। सिंहासनारूढ़ होने के बाद दान–दक्षिणा और पुरस्कार वितरण का कार्य चल रहा है। महाराज सबकी स्वयं चिन्ता कर रहे हैं। प्रत्येक का नाम लेकर संबोधन, अभिवादन एवं सम्मान। सभी अभिभूत हैं। जीजाबाई की आँखें भी आनन्दाश्रुओं से आपूरित हैं। शिवाजी महाराज यह देखकर कुछ कहना ही चाहते हैं कि माता जीजाबाई उनकी परेशानी ताड़ लेती हैं। वे दूसरी ओर घूम जाती है। और पास ही एक कोने में खड़े भाव–विभोर युवक के कंधे पर हाथ रखकर कहती है– ''अरे बेटा मदारी! तू यहाँ कोने में क्यों खड़ा है? तुझे कुछ पुरस्कार नहीं मिला क्या? सब आगे–आगे बढ़कर ले रहे हैं और तू यहाँ दुबका खड़ा है?''

''माँ! मेरी जगह यहीं है। मैं ठीक ही खड़ा हूँ।''

''शिब्बा'' माँ ने शिवाजी महाराज को आवाज देकर कहा–''देख, यह मदारी यहाँ चोरों जैसे छिपा खड़ा है। तू इसे भूल गया क्या?''

शिवाजी महाराज माँ की पुकार सुनकर दौड़े आते हैं। कहते हैं–''माँ, मैं मदारी को भूलने की कृतघ्नता कैसे कर सकता हूँ। मैं तो इसे बड़ी देर से खोज रहा हूँ। पंतजी से भी कई बार पूछा। हर बार यही उत्तर मिला कि अभी आया नहीं। माँ, मैं ही नहीं हमारे आने वाली पीढ़ियां भी इसे याद रखेंगी। मुझे आगरा के किले से बाहर निकाल कर लाने में जो भूमिका मदारी ने अदा की वह सबके बूते की बात नहीं हैं। कैदखाने में सेवा के बहाने दिनरात मेरे साथ प्राणों की बाजी लगाकर रहता था, और सचमुच जान पर खेलकर मेरे निकल आने के बाद मेरी चारपाई पर पूर्ववत् बैठा पैर दबाने का अभिनय करता रहा।''

महाराज की आँखें कृतज्ञता के आँसुओं से भर आईं। वे फिर बोले–''मदारी तू छिपकर क्यों खड़ा है, क्या....'' इसी बीच मदारी भावविह्वल सा महाराज के चरणों पर गिर पड़ा बोला– ''बस, महाराज। अब बस करें। मैं इस लायक कहाँ हूँ। मैंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिसके बदले में आप मुझे इनाम दें। जो कुछ कर पाया वह आप के पुण्य प्रताप के कारण ही नहीं तो मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति को आपकी सेवा का अवसर ही कहाँ से मिलता। आप की कृपा ही मेरे लिए सबसे बड़ा इनाम है।''

''नहीं मदारी! तुम्हें कुछ न कुछ तो इनाम लेना ही होगा। क्या तुम अपने महाराज का इतना सा भी आग्रह स्वीकार नहीं करोगे? तुम्हारे जी में कुछ भी हो आज माँग लो।''

''सच महाराज'' मदारी ने आश्चर्य मिश्रित स्वर में बोला।

''हाँ सच। तुम्हें सब कुछ माँग लेने का अधिकारी है।''

''महाराज ! क्या आप जो मैं मागूँगा वह सब कुछ देंगे।''

''हाँ, माँगकर देखो न।''

मदारी ने एक बार माता जीजाबाई की ओर

कृतज्ञतापूर्वक देखा, फिर शिवाजी की ओर मुड़कर बोला–

''तो फिर मैं माँगता हूँ देना होगा, मुकर न जाइएगा महाराज।''

''माँगकर तो देख'' – महाराज बोले।

''यदि आपकी यही इच्छा है तो''–मदारी बोला– ''महाराज आप अपने सिंहासन की देखभाल और सफाई करने का अधिकार मुझे दें। यह कार्य केवल मैं ही करूँगा और कोई नहीं।''

महाराज गद्‌गद हो उठे माँ की आँखें छलछला आई। शिवाजी ने मदारी को अपने सीने से लगा लिया और बहुत देर तक न जाने क्या–क्या उसी अवस्था में सोचते रहे। शायद यही कि ऐसे ही निस्वार्थ और बलिदानी वीरों के पुण्य प्रताप और शौर्य का ही यह परिणाम है कि 'हिन्दवी स्वराज्य' का सपना साकार हो सका। और एक एक करके बाजीप्रभु, ताना जी, प्रतापराव, मुरारबाजी आदि अनेक समर्पित बलिदानी वीरों के चेहरे उनकी आँखों में उभर आये। मदारी की आँसुओं से महाराज का कंधा और महाराज के आंसुओं से मदारी का कंधा भीगता रहा। चेतना लौटी तो देखा कि पूरे दरबार में आनन्दाश्रुओं की वर्षा हो रही थी।

मदारी को उसका हक मिल गया। इतिहास साक्षी है कि हिन्दू स्वराज्य के संस्थापक के मन में क्षणभर के लिए भी यह विचार नहीं आया कि मदारी निम्न जाति का है। उठता भी कैसे हिन्दू दर्शन विद्वेष नहीं मानवीय संवेदनाओं एवं सहज स्नेह के अधिष्ठान पर खड़ा है। वह मनुष्य को जाति के आधार पर नहीं, कर्म की कसौटी पर कसता है। उस कसौटी पर मदारी के जीवन की चमक अत्यन्त प्रखर थी।

संस्कृति प्रश्नमाला

- *अशोक वाटिका उजाड़ने के बाद हनुमान जी ने रावण के किस पुत्र का वध कर दिया?*
- *महाभारत का युद्ध किस स्थान पर हुआ। यह स्थान अब भारत के किस प्रान्त में है?*
- *वेल्स (इंग्लैण्ड) के एंग्लेसी द्वीप में एक मंदिर के भग्नावशेष आज भी मौजूद हैं। यह किनका मंदिर है?*
- *त्रिपुर सुंदरी शक्तिपीठ अपने देश में किस प्रान्त में हैं?*
- *देवराज इन्द्र के अस्त्र 'वज्र' का निर्माण किनकी अस्थियों से हुआ?*
- *औरंगजेब को असम में परास्त करने वाले कामरूप (असम) के 'अहोम' राजवंश के राजा कौन थे?*
- *श्रीमद्‌भागवत् पुराण में समय की सबसे छोटी इकाई क्या बताई गई और उसका मान क्या है?*
- *प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय भामाशाह की तरह अपनी सारी सम्पत्ति देश को समर्पित कर देने वाले सेठ कौन थे?*
- *महाराज सूरजमल के किस वंशज ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों को चुनौती दी?*
- *आस्ट्रेलिया की वे साधक कौन हैं जिन्होंने यूनान में योगाश्रम खोले तथा यूरोप और अमरीका में भी योग सिखाती हैं।*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

कोविड १९ : कुछ व्यावहारिक और ईमानदार तथ्य

● डॉ. अरुण हरवानी (एम.डी.)

जो कोरोना वायरस कोशिकाओं की दीवारों में घुस गए हैं, आप उनको नष्ट नहीं कर सकते हैं।

अगर आप गर्म पानी के गैलन भी पीते हैं - तो भी यह नहीं जायेगा, आप बस अधिक बार बाथरूम जाएंगे।

आपकी सुरक्षा के लिए सबसे अच्छी विधि है :

- हाथ धोना
- दो गज की शारीरिक दूरी बनाए रखना

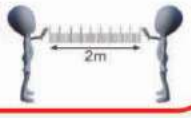

यदि आपके पास घर पर एक भी कोरोना रोगी नहीं है, तो आपके मकान में सतहों को कीटाणुरहित (Sanitize) करने की कोई आवश्यकता नहीं है

डिब्बाबंद माल, गैस पंप, शॉपिंग कार्ट और एटीएम कार्ड व मशीन संक्रमण का कारण नहीं बनते।

बस इन्हें स्पर्श के बाद अपने हाथ धो लें, हमेशा की तरह अपना जीवन जीएं।

कोरोना एक खाद्य संक्रमण नहीं है।

यह संक्रमण फ्लू की बूंदों से जुड़ा हुआ है जो की छींकने या खांसने से फैलती है।

आप बहुत अधिक एलर्जी और वायरल संक्रमण के साथ गंध की अपनी भावना खो सकते हैं।

यह केवल कोरोना का विशिष्ट लक्षण नहीं है।

एक बार घर पहुँच कर, आपको अपने कपड़ों को तुरंत बदलने और स्नान करने की आवश्यकता नहीं है!

स्वच्छता एक गुण है, मानसिक उन्माद नहीं!

कोरोना वायरस हवा में लटका नहीं है।

यह एक छोटी बूंदों से होने वाला संक्रमण है जिसके लिए निकट संपर्क की आवश्यकता होती है।

हमें कोरोना के साथ महीनों या वर्षों तक रहना पड़ सकता है।

हम इस तथ्य को नकार नहीं सकते।

हम इसकी वजह से घबराकरअपने जीवन को खराब न करे।

आइये हम कोरोना के साथ जीना सीखे।

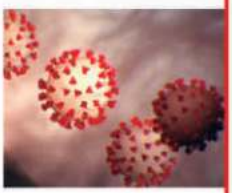

हवा साफ है, आप उद्यानों में (केवल अपनी शारीरिक सुरक्षा दूरी रखते हुए) पार्कों में घूम सकते हैं।

(लॉकडाउन खत्म होने के बाद)

बनाये हुए भोजन के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

लेकिन आप चाहें तो इसे माइक्रोवेव में भी गर्म कर सकते हैं।

कोरोना के खिलाफ सामान्य साबुन का उपयोग पर्याप्त है, जीवाणुरोधी साबुन की आवश्यकता नही हैं।

कोरोना एक वायरस है, बैक्टीरिया नहीं।

सिरका(Vinegar), गन्ने का रस, हल्दी और अदरक लेने से आपको वायरस से बचाया नहीं जा सकता

ये रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए हैं न कि बीमारी को ठीक करने के लिए।

अपने जूते के साथ कोरोना घर लाने की संभावना आप पर एक दिन में दो बार बिजली गिरने की संभावना की तरह है

छोटी बूंदों वाला संक्रमण इस तरह नहीं फैलता है।

दस्ताने पहनना भी एक बहुत अच्छा विचार नहीं है।

वायरस दस्ताने में जमा हो सकता है और यदि आप दस्ताने से अपना चेहरा छूते हैं तो आसानी से फैल सकता है।

लंबे समय तक मास्क पहनना सांस लेने और ऑक्सीजन के स्तर में बाधा डालता है।

इसे केवल भीड़ में और किसी ऐसे व्यक्ति से जिसे संक्रमित हो सकने की संभावना हो बिना पर्याप्त दूरी से बात करते समय पहनें।

प्रतिरोधक क्षमता रोगज़नकों के संपर्क में आने से बढ़ती है, न कि घर पर बैठकर और तले हुए \ मीठे पदार्थ \ मसालेदार भोजन और वातयुक्त (aerated) पेय का सेवन करने से।

हमेशा विसंक्रमित (Sterile) वातावरण में रहने से प्रतिरक्षा बहुत कमजोर हो जाती है। अगर आप प्रतिरक्षा बढ़ाने वाले भोजन खाते हैं, तो भी कृपया अपने घर से नियमित रूप से बाहर (किसी भी पार्क या अन्य स्थान) जाएं।

(लॉकडाउन खत्म होने के बाद)

धन्यवाद !

बार बार हाथ धोते रहिये।

दो गज की शारीरिक दूरी बनाए रखिये।

दादाजी की कहावतें

कहानी

सुषमा दुबे

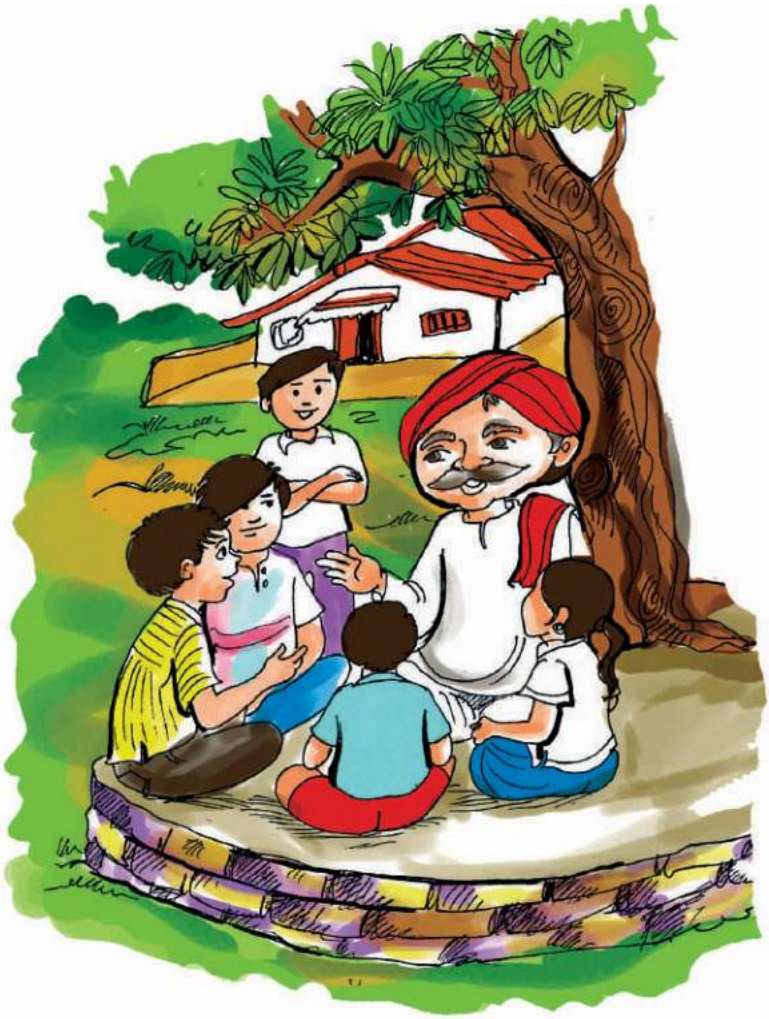

किसी गाँव में एक दादाजी रहते थे। हर दिन बच्चों को चौपाल पर इकट्ठे करके नई नई कहानियाँ सुनाते रहते थे। बच्चों को दादाजी से कहानी सुनने में बड़ा आनंद आता था क्योंकि दादाजी कहानी सुनाते समय अपने चेहरे की भाव भंगिमाएँ कुछ इस प्रकार बनाते थे कि बच्चे देखते ही रह जाते थे। उनकी कहानियाँ बहुत मजेदार होती थी ज्यादातर उनकी कहानियों में कोई ना कोई संदेश भी छुपा रहता था। बच्चे दादाजी से अच्छी अच्छी बातें सीखकर अपने घर जाते थे तो उनके घरवाले भी बहुत प्रसन्न होते। यही नहीं दादाजी बच्चों के सवालों के जवाब भी बहुत समझकर और तर्कों के साथ दिया करते थे। इसीलिए बच्चे दादाजी के पास आने के लिए हरदम तैयार रहते थे।

एक दिन चंदन ने दादाजी से पूछा, ''दादाजी! ये कहावतें क्या होती है?'' दादाजी ने हँसकर कहा ''जैसे तुम दूध में दूध मसाला डालकर पीते हो तो स्वाद कितना बढ़ जाता है ऐसे ही जब हम अपनी बातों में कहावतें डालते हैं तो बातें बहुत सुंदर बन पड़ती है हमारी हिन्दी और मालवी की कहावतें बहुत अर्थपूर्ण और सुंदर होती है। कहावत का अर्थ कहा जाए तो थोड़े में बहुत कहना। एक कहावत के माध्यम से समझाता हूँ जैसे **'गागर में सागर भरना'**। समुद्र तो कितना बड़ा होता है। क्या उसको एक गागर में भरा जा सकता है? लेकिन जब कोई व्यक्ति थोड़े में अच्छा काम कर जाता है तो उसे हम गागर में सागर कहते हैं। एक और कहावत है जो तुम लोगों ने भी अक्सर सुनी होगी **'ऊँट के मुँह में जीरा'** अर्थात जरूरत से बहुत कम चीज होना।

अच्छा मिष्ठी! तुम बताओ तुम्हें कोई कहावत आती है क्या?'' मिष्ठी ने दो मिनट सोचा और फिर उछल कर बोली, ''हां मेरी दादी एक कहावत बार-बार कहती है। अच्छा कौन सी कहावत? सब एक साथ बोल पड़े। उसने बोला दादी मुझे रोज कहती है मिष्ठी ऐसे उछल उछल कर क्यों चलती हैं **चार लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे** और जब कभी मैं मुँह से आवाज करके खाना खाती हूँ तो दादी फिर टोकती है तुझे समझाया ना ऐसी हरकत करेगी तो चार लोग क्या कहेंगे। अच्छा दादाजी! बताओ इस कहावत का क्या अर्थ है और यह चार लोग कौन हैं?'' उसकी बात सुनकर रजत, विभावरी, अनाया सब सोच में पड़ गए और सोचने लगे ''हाँ ऐसा तो हमें भी कई लोग कहते हैं कि चार लोग क्या कहेंगे। बताओ ना दादाजी! बताइए ना यह चार लोग कौन है और वे क्यों हमें कुछ कहेंगे?'' उनकी बातें सुनकर दादाजी जोर-जोर से हँसने लगे जब उनकी हँसी रुकी तो उन्होंने बोलना शुरु किया, ''देखो बच्चो! हम समाज में रहते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और जब हम कोई भी काम करते हैं। अच्छा या बुरा तो लोग उसको देखते सुनते हैं आकलन करते और उस अनुसार फिर वह हमारे प्रति राय प्रकट करते हैं। अगर हम कोई अच्छा काम कर रहे हैं तो अच्छी राय बनाते हैं लेकिन हम कुछ ऐसा काम कर

रहे हैं जो समाज के हिसाब से गलत है तो फिर वह लोग बुरी राय बनाएंगे। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति जो अच्छे और सम्पन्न घर से है और वह फटे पुराने या मैले कुचैले कपड़े पहन कर घर से निकलेगा तो उनकी पत्नी या माँ तुरंत रोक देगी अरे! ऐसे बाहर क्यों जा रहे हो चार लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे? ये चार लोग कोई विशेष व्यक्ति नहीं है चार लोग मतलब समाज के लोग।''

तभी चिराग बोल पड़ा ''दादाजी! जब मैं गाना गाता हूँ तो सब लोग मुझे ऐसा क्यों कहते हैं कि **पूत के पाँव पालने में दिख रहे हैं?**'' मतलब है कि तुम बहुत अच्छा गाना गाते हो। याने तुमने अभी से बता दिया कि तुम प्रतिभाशाली हो।'' अब चिराग के साथ सभी बच्चे समझ गए थे कि पूत के पाँव पालने का क्या अर्थ होता है। कुछ कहावतें बहुत गंभीर अर्थ प्रकट करती हैं तो कुछ कहावतें और मुहावरे मजेदार भी होते हैं।

''बताइए ना दादाजी! मजेदार कहावतें कैसी होती है?''

दादाजी को भी बहुत मजा आ रहा था बच्चों से बात करने में उन्होंने अपने गले को साफ किया और पालथी लगाकर बैठ गए और बोलने लगे, **'गुड़ खाए गुलगुले से परहेज करे'** – दिखावटी परहेज।

'नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली' – दिखावटी परहेज।

'चौबे जी गए थे छब्बे जी बनने बन गए दुबे जी' – लाभ के लोभ में हानि उठाना।

'अन्धों में काना राजा' – मूर्ख मण्डली में थोड़ा पढ़ा–लिखा भी विद्वान और ज्ञानी माना जाता है।

'अक्ल बड़ी या भैंस' – शारीरिक बल से बुद्धि बड़ी है।

'आँख का अन्धा नाम नैनसुख' – नाम के अनुसार काम नहीं करना।

'आ बैल मुझे मार' – जान–बूझकर आफत मोल लेना।

'ओखली में सिर दिया तो मूसली से क्या डर' : जब कठिन काम के लिए कमर कस ली तो कठिनाइयों से क्या डरना।

'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे' : अपराधी अपने अपराध को स्वीकार करता नहीं, उल्टा पूछने वाले को धमकाता है।''

दादाजी की कहावतें और उनके अर्थ सुनकर बच्चे हँस हँस कर लोटपोट हो गए। दादाजी ने उनसे कहा ''कल से अपने घर वालों से कुछ नई कहावतें सीखकर आना और मुझे बताना।'' अब तो बच्चों को इस खेल में बड़ा मजा आने लगा यहीं नहीं वे अपनी बातों में कहावतों का प्रयोग भी करने लगे। ● **इन्दौर (म.प्र.)**

प्यारे बच्चे

कविता

कैलाश त्रिपाठी

कितने भोले कितने अच्छे
सुखद मनोहर प्यारे बच्चे।
मीठी वाणी सहज सरल है,
इनसे सबको प्यार प्रबल है।
नहीं बनावट द्वेष जानते,
प्यार और अपनत्व मानते।
फूलों जैसा कोमल तन है,
नहीं कलुषता निर्मल मन है।
जहाँ कहीं यह मौका पाते,
लगें खेलने धूम मचाते।
करते सब हैं इन्हें दुलार,
लगता बचपन सुखद अपार।
रहती अधर मधुर मुस्कान,
बनते यही राष्ट्र की शान।
भेदभाव सब दूर भगाते,
जन मन में खुशहाली लाते।
मन से सब मतभेद भुलाते,
सदा सभी को मीत बनाते।

– अजीतमल (उ.प्र.)

मेजर धनसिंह थापा

''सीरीजप-१ उस चौकी का नाम है जो १/८ गोरखा रायफल ने लद्दाख में पेंगांग झील के उत्तरी किनारे पर स्थापित की गई उन चौकियों में एक थी जो चीनी आक्रमणकारियों को भारत की भूमि पर पैर भी न रखने देने के उद्देश्य से स्थापित चौकसी चौकी थी। यह बात १९६२ के दशक की है। तब चीनी सैनिक साजो सामान हमारी सेना को उपलब्ध सैन्य उपकरणों से कहीं अधिक और उत्तम थे आधुनिक थे।

१९ अक्टूबर, १९६२ मेजर धनसिंह थापा ने चीनी आक्रमण की आशंका अनुभव कर अपने सैनिकों का गहरी खंदकें खोदने का निर्देश दिया। कड़ाके की सर्दी में उस क्षेत्र की बर्फ पत्थर से अधिक कठोर हो चुकी थी। खंदक खोदना अत्यंत कठिन काम था। रेत और अनाज की बोरियों से ही अपने लिए सुरक्षात्मक आड़ बनाने के अलावा कोई विकल्प न था।

आशंका सत्य हो गई २० अक्टूबर की सुबह के साढे चार बजे ही थे कि चीनियों का भीषण आक्रमण हुआ। मोर्टार ओर गोलों की बरसात सी होने लगी। जिसकी आड़ में चीनी सेना भारतीय चौकी से मात्र १५० गज की दूरी तक आ पहुँची। लगभग ६०० चीनियों का जत्था चौकी हथियाने बढ़ा आ रहा था। भारतीय सैनिकों ने अपने मारक क्षेत्र में आते ही हल्की मशीनगनों और राइफलों से भारी साहस का परिचय देते हुए बड़ी संख्या में हताहत शत्रु सैनिकों को सौ गज दूर से ही भागने पर विवश कर दिया।

कंपनी कमांडर मेजर धनसिंह थापा अपने सहयोगी सूबेदार मीन बहादुर गुरंग के साथ एक से दूसरी चौकी पर तूफानी गति से पहुंच पहुंच कर अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ा रहे थे। लेकिन शत्रु फिर लौटा इस बार रेंगते हुए। सीरीजप से उसकी दूरी ५० गज रही होगी। उसने आग लगाने और धूंआ करने वाले बम फेंकने आरंभ कर दिये। बम हथगोलों और छोटे हथियारों से साहसपूर्ण प्रतिकार कर रहे थे। तभी सूबेदार मीन बहादुर गुरंग का बंकर ढहा और वे उसी में दब गए। लेकिन वे बहादुर नाम के ही तो थे नहीं अपनी हल्की मशीनगन ले मानो धरती फाड़ कर मलबे से बाहर निकले और शत्रु को चौंकाते हुए गोलियाँ बरसाने लगे लेकिन अन्ततः वीरगति मिली।

चौंतीस में से सात सैनिक बचे थे पर चौकी पर मेजर धनसिंह का कब्जा बना हुआ था। शत्रु भारी मशीनगनों से तो आग बरसा ही रहा था उसके पास की झील में चार लड़ाकू जलयान भी उतार दिये। तभी रबीलाल थापा एक अन्य सैनिक के साथ एक छोटी भारतीय चौकी की टोह लेने उसी झील में आ पहुँचे। चीनी गोलों से दूसरी नाव तो डूब गई सैनिक मारे गए पर ये बचा गए। इधर चौकी के सात वीरों में से भी चार अपनी भारत माता की गोद में सदा के लिए सो चुके थे। मेजर धनसिंह थापा के बंकर पर अग्निबम से आग लगी उसे तो जैसे तैसे बुझा लिया पर सीरीजप चीनी कब्जे में चली गई। चीनी टैंक लेकर आ पहुँचे थे। मेजर बंदी बना लिये गए। रबीलाल ने सूचना दी कि सीरीजप हाथ से निकल गई और मेजर शहीद हुए।

यह तो बहुत दिनों बाद पता लगा कि वे तीन सैनिकों के साथ शत्रु की कैद में थे वस्तुतः राइफल मेन तुलसीराम थापा किसी तरह कैद से बचकर चार दिन की मृत्युंजयी यात्रा करके अपनी बटालियन पहुँच सके।

भारत सरकार ने अपने रणबांकुरे मेजर धनसिंह को परमवीर चक्र से सम्मानित किया।

गुल्लक के पैसे

कहानी

राजकुमार धर द्विवेदी

नौकरानी कमला का नन्हा बेटा सूरज अस्पताल में भरती था। विभा की माँ उसे देखने जाने वाली थीं।

''माँ, मैं भी आपके साथ अस्पताल चलूँगी।'' विभा बोली।''

''ट्यूशन पढ़ने नहीं जाओगी?'' माँ ने पूछा।

''नहीं। आचार्य जी कहीं गए हैं।'' विभा ने बताया।

''तब ठीक है, चलो अस्पताल।'' माँ ने कहा।

माँ–बेटी कार से अस्पताल के लिए चल पड़ीं। अस्पताल पहुँची तो उन्हें देखकर नौकरानी कमला रो पड़ी और बोली, '' बच्चे को बुखार छोड़ ही नहीं रहा है। देखिए इसकी हालत। आँख ही नहीं खोल रहा है।''

''हाँ, हालत तो बहुत नाजुक लग रही है। क्या कहा डाक्टर ने?'' विभा की माँ ने चिंतित स्वर में पूछा।

''सरकारी अस्पताल है, मालकिन ठीक से इलाज नहीं हो रहा है। डॉक्टर सुबह देखकर चले जाते हैं। इसके बाद कोई नहीं देखता। मेरे पति का भी पता नहीं है। वह एक बार भी अस्पताल नहीं आया। जी बहुत घबरा रहा है मेरा।'' कमला बोली।

''घबराओ मत, कमला। मैं कुछ करती हूँ।'' विभा की माँ ने कहा और फिर वे मोबाईल पर बात करने वार्ड से बाहर चली गई।

विभा ने भी कमला से कहा, ''काकी धीरज रखिए। आपके बेटे का अच्छा इलाज होगा। माँ जरूर कुछ करेंगी। ये लीजिए पाँच सौ रुपए रख लीजिए। मैं गुल्लक से निकाल कर लाई हूँ।''

''नहीं बिटिया। ये रुपये आप रखे रहें। आपके काम आएंगे।'' कमला बोली।

''इससे बढ़कर मेरा क्या काम होगा, काकी? ये पैसे आपके काम आएंगे तो मुझे खुशी होगी। ले लीजिए।'' विभा ने यह कहकर कमला को रुपये थमा दिए।

कुछ देर में विभा की माँ आ गई। उन्होंने कहा, '' मैंने एक अच्छे निजी अस्पताल में बात की है। यहाँ से रेफर करा लेंगे। वहाँ तुम्हारे बच्चे का अच्छा इलाज हो जाएगा।''

कमला ने हाथ जोड़कर कहा, ''ठीक है, मालकिन। आप मेरे बेटे को बचा लीजिए। मैं आपकी पाई–पाई चुका दूँगी।''

''पैसे की कोई बात नहीं है, कमला। बस तुम्हारा बच्चा ठीक हो जाए, यही चाहती हूँ।'' विभा की माँ बोलीं।

उसी दिन कमला के बच्चे को अच्छे अस्पताल में विभा की माँ ने भर्ती कराया। उसकी वहाँ अच्छे से जाँच हुई और फिर बेहतर इलाज होने लगा।

विभा और उसकी माँ बराबर देखरेख कर रही थीं।

कुछ दिनों में कमला के बेटे की सेहत में काफी सुधार हो गया। कमला कि चिंता दूर होने लगी। विभा और उसकी माँ को भी खुशी हो रही थी। दस–बारह दिन में

कमला का बेटा पूरी तरह ठीक हो गया। उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई।

अस्पताल से छुट्टी के समय विभा की माँ ने कमला को पाँच हजार रुपये दिए और कहा, ''बच्चे के दूध और दवा के लिए ये रुपये हैं। बच्चे का पूरा ध्यान रखना और कोई परेशानी हो तो बताना। और हाँ, जब बच्चा पूरी तरह ठीक हो जाए, तभी काम पर आना।''

''जी मालकिन।'' कमला हाथ जोड़कर बोली।

संकट पूरी तरह टल चुका था। कुछ दिनों बाद कमला काम पर आने लगी थी। उसने एक दिन मालकिन को बताया, ''विभा बिटिया ने भी मुझे सरकारी अस्पताल में पाँच सौ रूपये दिये थे। गुल्लक से निकालकर ले गई थीं पैसा।''

''अच्छा? लेकिन उसने मुझे बताया नहीं।'' मालकिन बोलीं।

तभी वहाँ विभा आ गई। उसने कहा, ''गुल्लक के पैसे खाने-पीने में खर्च हो जाते। इलाज में लग गए, इससे मुझे बेहद खुशी मिली। एक बात कहूँ, माँ?''

''बोलो-बोलो।'' माँ ने कहा।

''माँ, एक दिन मैंने सोशल मीडिया पर किसी की पोस्ट पढ़ी थी कि लोग रिसेप्शन में जाते हैं तो लिफाफा ले जाते हैं। कोई मना भी किए रहता कि उपहार न लाएं तो भी ले जाते हैं, लेकिन अस्पताल में किसी रोगी को देखने जाते हैं तो खाली हाथ जाते हैं, जबकि वहाँ लिफाफा देना चाहिए। यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी। उस दिन शाम को जब आप अस्पताल जाने लगीं तो मैंने गुल्लक से पैसे निकाले और रख लिए।'' विभा ने बताया।

''बहुत अच्छा किया। सोशल मीडिया पर जिसने भी यह लिखा, बहुत अच्छा लिखा और तुमने सिर्फ पढ़ा ही नहीं, बल्कि उस पर अमल किया, यह बहुत अच्छी बात है।'' माँ ने कहा।

माँ का समर्थन पाकर विभा मुस्करा उठी।

● **रायपुर (छ.ग.)**

।। समाचार ।।

अश्वनी कुमार पाठक की कृति 'परीक्षा' विमोचित

सिहोरा। नगर के वरिष्ठ साहित्यकार अश्वनी कुमार पाठक की पन्द्रहवी कृति 'परीक्षा' बाल किशोर कहानी संग्रह का विमोचन अखिल भारतीय पत्रकार साहित्यकार सम्मान समारोह में हुआ, जिसका आयोजन आचार्य कृष्णकान्त चतुर्वेदी के मुख्य अतिथि, आचार्य भगवत दुबे की अध्यक्षता तथा डॉ. राजकुमार 'सुमित्र' की उपस्थिति में शहीद स्मारक भवन जबलपुर में संस्कारधानी की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान ''कादम्बरी'' के तत्वावधान में किया गया।

सरस्वती वंदना से प्रारंभ हुए सामोरह में मंचासीन अतिथिगण के स्वागतोपरान्त साहित्य की विभिन्न विधाओं के चयनित साहित्यकारों के अतिरिक्त पत्रकार भी सम्मानित हुए। तदनन्तर कृति 'परीक्षा' का लोकार्पण मुख्य अतिथि के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। कहानी संग्रह 'परीक्षा' में १३ बालोपयोगी कहानियाँ संग्रहीत हैं, जो बच्चों को संस्कारशील बनाने तथा उनमें मानवीय संवेदना का उद्रेक करने में सहायक हैं।

सफाई

लघु कहानी

शैलजा भट्ट

२ दिन से बीच पर घूमने के लिए जाने की योजना बन रही थी। विभिन्न गतिविधियों को करने के लिए बच्चे व बड़े अपने बस्ते में खेल का सामान रख रहे थे। आखिर योजनाओं को फलीभूत करने का समय आ ही गया। सुबह ४ बजे ही सब लोग घर से निकल पड़े ताकि सूरज चढ़ने से पहले बीच को छोड़ सके और धूप से बच सकें।

वहाँ पहुँचते ही बच्चों ने अपना सैंड आर्ट का सामान, गेंद, क्रिकेट का सामान सभी जल्दी–जल्दी निकाल कर खेलना शुरु कर दिया। कोई घरौंदा बनाता फिर लहरों के आकर उसे रेत में मिला देने का इंतजार करता, फिर सभी ने मिलकर पानी में वॉलीबाल खेलना शुरु किया। यह सब सुबह ८ बजे तक चलता रहा तब तक तट पर बहुत भीड़ इकट्ठा हो चुकी थी। अब सभी ने कुछ देर आराम कर कुछ खाने का निर्णय लिया। और तट पर ही बने होटल में चले गए। अभी खाना चल ही रहा था कि, तभी सब से छोटे बच्चे आर्यन का ध्यान एक व्यक्ति पर गया जो चिप्स का खाली पैकेट तट पर ही फेंक कर आगे बढ़ गया था। वह तुरंत उठा और उस व्यक्ति के पास पहुँचकर कहने लगा, ''भाई साहब! आपका कुछ सामान तट पर पड़ा है कृपया उसे उठा लीजिए।'' पहले वह व्यक्ति असमंजस की स्थित में लगा फिर पीछे मुड़कर नीचे देखा लेकिन उसे कुछ भी नहीं दिखा। तब आर्यन ने रैपर की ओर संकेत किया। पहले तो वह व्यक्ति गुस्से के भाव लिए आर्यन की ओर देखने लगा लेकिन जब देखा बहुत से बच्चे उसे घेरकर खड़े हैं, तो उसने चुपचाप रेपर उठाकर पास के डस्टबिन में डाल दिया। आर्यन ''धन्यवाद भाई साहब!'' कहकर वापस होटल में आकर बैठ गया। लेकिन यह क्या फिर से किसी दूसरे व्यक्ति ने वही हरकत दुहराई, लेकिन इस बार पानी की खाली बोतल, भोजन, खाली रैपर, टूटी चप्पल उसने फेंकी थी।

इस बार भी आर्यन भागा, लेकिन उस व्यक्ति ने कुछ भी उठा कर डस्टबिन में डालने के लिए असहमति जाहिर की और अपनी कार की तरफ बढ़ गया। आर्यन के गुस्से का ठिकाना नहीं था। उसने वहाँ खड़े लोगों के साथ मिलकर सारा सामान उठाकर, उनके साथ उस व्यक्ति की कार की ओर बढ़ गए और छिपते छिपाते उस व्यक्ति की कार की डिक्की में सारा सामान डाल दिया ताकि उस व्यक्ति को अहसास हो सके कि, जब अपनी वस्तु गंदी होती है तो कैसा लगता है। वापस आकर उसने शांति की सांस ली और फिर सभी पुनः सब लोग तट पर खेलने के लिए चल पड़े।

● बैंगलुरु (कर्नाटक)

ओशियेनिया

आलेख

श्रीधर बर्वे

महाद्वीपों में एशिया सबसे बड़ा है तो महासागरों में सबसे बड़ा महासागर प्रशांत महासागर।

इस महासागर के मानचित्र को ध्यान से देखें तो अमेरिका महाद्वीप के पश्चिम, ऑस्ट्रेलिया के उत्तर तथा जापान के पूर्व में दूर-दूर पर कुछ छींटे और छींटों के समूह दिखाई देते हैं। वास्तव में ये द्वीप और द्वीप समूह के नक्शे हैं। इनमें से अधिकांश देशों की स्वतंत्र हैसियत है एवं वे संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य बन चुके हैं। स्वाधीनता के पूर्व कुछ द्वीप ब्रिटेन और फ्रांस के उपनिवेश थे, तो कुछ द्वीप ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को संयुक्त राष्ट्र द्वारा सौंपे गए ''ट्रस्टटेरिटरी'' थे। वर्तमान में इस क्षेत्र को तीन उपक्षेत्रों में विभाजित कर चिन्हित किया है। ये है- मेलानेसिया, पोलिनेसिया और माइक्रोनेसिया।

इन क्षेत्रों की स्थूल रूप से हम पहचान कर सकते हैं, न्यूगिनी द्वीप और उसके आसपास के द्वीप मेलानेसियाई नाम से तथा न्यूजीलैण्ड (के मूल निवासी) सामोआटोंगा मिश्रित रक्त के हैं। प्रशांत महासागर के मध्य भाग में स्थित छोटे छोटे द्वीप और द्वीप समूह माइक्रोनेसिया क्षेत्र में है।

ओशियेनिया में १४ स्वतंत्र देश हैं जिनमें ऑस्ट्रेलिया, पापुआ-न्यूगिनी और न्यूजीलैण्ड बड़े देश हैं। फिजी, सोलोमन द्वीप और सामोआ मझोले आकार के द्वीप समूहों के देश हैं जबकि किरीबाती, मार्शल द्वीप माइक्रोनेसिया, पलाऊ, टोंगा, तुवालु, वनुआतु और नाऊरु छोटे छोटे स्वतंत्र द्वीप अथवा द्वीपों के स्वतंत्र देश हैं।

नाऊरु : नाऊरु केवल २१ वर्ग किलोमीटर और दस हजार की जनसंख्या का विश्व में सबसे नन्हा गणराज्य है। ३१ जनवरी १९६८ को स्वतंत्र हुए इस देश की १८ निर्वाचित सदस्यों की संसद है। जिसकी अवधि ३ वर्षों की होती हैं। अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली है। फास्फेट की खानों और उत्खनित खनिज के निर्यात से प्राप्त आय ने इस छोटे से देश को आर्थिक रूप से पर्याप्त समृद्ध किया है। आर्थिक समृद्धि ने नाऊरु निवासियों के जीवन को दूर तक प्रभावित किया है। आर्थिक समृद्धि ने नाऊरू निवासियों को शारीरिक श्रम से विमुख कर उन्हें मोटापे का शिकार बना दिया है। ९०% नाउरू निवासी मोटे हैं और वहाँ की आबादी के ४०% लोग टाइप-२ डायबिटिज (मधुमेह) से ग्रसित हैं।

तुवालु : नाऊरु से कुछ ही वर्ग किलोमीटर बड़ा तुवालु आजादी के पूर्व एलिसद्वीप के नाम से प्रख्यात था। महज २६ वर्ग किलोमीटर और १० हजार की जनसंख्या

का यह द्वीप देश पहली अक्टूबर १९७८ को ब्रिटिश अधिपत्य से मुक्त हुआ। विदेशों में निवास कर रहे तुवालु के नागरिकों द्वारा प्रेषित धन इस देश के राजस्व का बड़ा स्रोत है। समुद्री क्षेत्र का देश होने के कारण मत्स्य उद्योग भी आय का अन्य स्रोत है। तुवालु जन पोलिनेसियाई है। फनाफुटि राजधानी है।

स्थानीय भाषा में 'तुवालु' शब्द का अर्थ है ''हम आठ साथ साथ हैं।'' क्योंकि इस द्वीप समूह में आठ द्वीप हैं। वैसे इस समूह में ९ द्वीप हैं। नौवाँ द्वीप बहुत ही छोटा है।

मार्शलद्वीप : मार्शल द्वीप समूह एक नन्हा सा देश १८१ वर्ग किलोमीटर और ६५ हजार जनसंख्या का है। इस द्वीप देश का दुर्भाग्य है कि अमेरिका ने अपने अधिकांश परमाणु परीक्षण इसके समीपवर्ती सागर में किये है। परमाणु परीक्षणों के दुष्प्रभावों को निरंतर सहने वाला यही प्रथम देश है। २१ अक्टूबर १९८६ को स्वतंत्र हुए इस देश की रक्षा व्यवस्था का जिम्मा अमेरिका पर है। इसी गणराज्य का बिकिनी अटोल (प्रवाल द्वीप) वह द्वीप है जो १९४६ से १९५८ के मध्य सबसे बड़ा था। इस द्वीप के जनगण माइक्रोनेसियाई है, इसकी राजधानी का नाम मजेदार हैं – दलप उलिगा दरित। मार्शल द्वीप गणराज्य में अटोल की दो श्रंखलाएं है– एक का नाम है 'रतक' जिसका अर्थ है 'सूर्योदय' तथा दूसरी का नाम है 'रलिक' जिसका अर्थ है 'सूर्यास्त'।

टोंगा : इसी महासागर में टोंगा नामक देश हैं, जहाँ एक राजा का शासन चलता है। एक लाख दस हजार की प्रजा ७४८ वर्ग किलोमीटर के देश में बसती है। इस देश में १६९ छोटे बड़े द्वीप है। राजधानी का नाम है नुकूअलोफा। ४ जून १९७० को मूर्त हुए इस देश का पहले नाम था– एलिज द्वीप। टोंगा की अर्थ व्यवस्था कृषि आधारित है। सुंदर और हरे भरे द्वीपों का देश होने के कारण पर्यटन भी अन्य उद्योग है।

माइक्रोनेसिया : ग्रीक (यूनानी) भाषा की धातु है – माइक्रोस जिसका अर्थ है : सूक्ष्म। इसी अर्थ को सार्थक करता प्रशांत महासागर में एक देश है– ''माइक्रोनेसिया''– अत्यंत छोटे छोटे द्वीपों का समूह देश। कुल ६०७ द्वीपों में ७०२ वर्ग मील भूमि है जिस पर लगभग सवा लाख जनता निवास करती है। ३ नवम्बर १९८६ को बना माइक्रोनेसिया एक संघीय गणराज्य है, जिसमें चार राज्य हैं। पौनपेई, कोसराए, त्रुक और येप। राजधानी ''पलिकिर'' है। माइक्रोनेसिया में द्वीप दोनों प्रकार के है, ज्वालामुखीय तथा प्रवालीय। अर्थव्यवस्था पर्यटन मछली पकड़ने तथा फल उत्पादन पर निर्भर करती है।

किरीबाती : यह देश पहले ''एलिसद्वीप'' के नाम से जाना जाता था। माइक्रोनेसिया संजाति के एक लाख निवासी किरीबाती देश में निवास करते हैं। इस छोटे देश का क्षेत्रफल केवल ८६१ वर्ग किलोमीटर है। ३३ कोटे बड़े द्वीपों में कुछ अटोल भी है। इस देश को १२ जुलाई १९७९ में ब्रिटेन के आधिपत्य से इस देश को आजादी मिली। यहाँ निवासी माइक्रोनेसिया और पोलिनेसियाई संजाति मूल के हैं। इस देश के एक द्वीप पर फास्फेट की खानें हैं। कुछ कृषि उपज तथा मछली पकड़ना और पर्यटन अर्थव्यवस्था के आधार हैं। अन्तरराष्ट्रीय तारीख रेखा पर यह देश स्थित है। अंग्रेजी वर्तनी (स्पेलिंग) के आधार पर इसे किरीबाती उच्चारित करते हैं। इस द्वीप समूह देश की राजधानी 'तरावा' है।

पलाऊ : २६ बड़े और ३०० छोटे छोटे द्वीपों के समूह देश पलाऊ का क्षेत्रफल १६३२ वर्ग किलोमीटर तथा आबादी केवल बीस हजार है। इस देश की जितनी जनसंख्या है उससे कई गुना पर्यटक प्रतिवर्ष आकर अर्थव्यवस्था को आधार प्रदान करते हैं। वर्तमान राजधानी मेलेकेओक के स्थान पर बाबेलथुआप में नई राजधानी बनाई जा रही है। देश के निवासियों में लगभग एक तिहाई बाहरी देशों में रहकर अपनी अर्जित आय का बड़ा भाव स्वदेश भेज कर अर्थव्यवस्था को सहारा दे रहे हैं।

● **इन्दौर (म.प्र.)**

स्वयं बनें वैज्ञानिक :

जादू का सिलेण्डर

आलेख
डॉ. राजीव तांबे

अनुवाद
सुरेश कुलकर्णी

आज हम आपको जादू बताने जा रहे हैं कि जादू का सिलेंडर कैसा होता है। आप तैयार हैं क्या? चलिए इसके लिए सामग्री क्या लगेगी यह लिख लीजिए।

प्लास्टिक का फेस पावडर का लम्बे खड़े आकार का डिब्बा।

छुरी।

२ मीटर धागा।

एक कागज।

२ कटोरी नमक।

लगभग ४० नुकीली तीलियाँ।

पहले तो पाउडर के डिब्बे का तल छूरी से काट लें। अब उस डिब्बे का आकार प्लास्टिक नली जैसा हो गया है। अब धागे से इस तलवे पर कागज रखकर उसे कसकर बांध लीजिए। अब इस नली में ६-७ इंच तक नमक डाले। जो ४० नुकीली तीलियाँ हमने ली है उसे इकट्ठी बांध लेवे। अब दायें हाथ से नली सीधी पकड़ें और बांये हाथ से नुकीली तीलियाँ गोल गोल घूमकार अंदर की ओर जोर से धकेले, जिससे तलवे में बंधा हुवा कागज फटना चाहिए।

यह होता क्या है? वह कागज फटता ही नहीं। कितना भी जोर लगा लो, वह तीलियाँ कागज तक पहुँच ही नहीं पाती। यही तो है जादू का सिलेंडर।

यह क्यों होता है? आप अनुमान लगा सकते हैं क्या? नहीं। कोई बात नहीं हम समझा देते हैं इसके पीछे का रहस्य।

नुकीली तीलियाँ व कागज के बीच हमने नमक डाला है, और ऊपर से जोर लगाने के बाद भी तीलियाँ नीचे कागज तक नहीं पहुँचती इसका कारण यह है कि नमक ठोस बना है और उसके बीच जो खाली जगह है वहाँ हवा ने अपना कब्जा बनाए रखा है। जब हम ऊपर से जोर लगा कर तीलियाँ धकेलते है तब नमक आपस में जम जाता है और जो बीच में जो हवा है वह अपना दबाव बढ़ाती है और तीलियों को नीचे आने से रोकती है। इसे यान पोज भी कहा जाता है। जिसे निर्वात प्रदेश कहते हैं। जो दोनों ओर से प्राप्त दबाव से बनता है।

अब आप नमक की जगह चावल की चूरी का इस्तेमाल करके देखो क्या होता है? जो भी होगा हमें लिखकर बताना न भूलें।

आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी।

● पुणे (महाराष्ट्र)

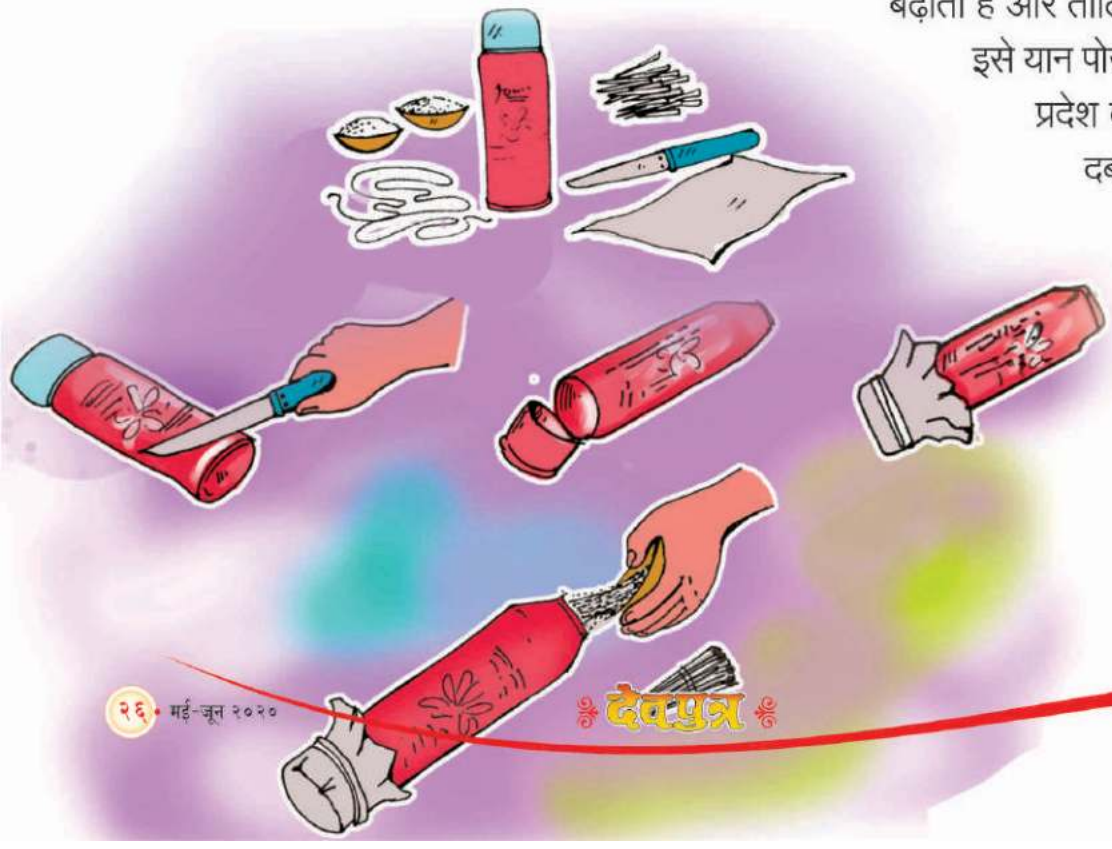

ऐसे मिली आईस्क्रीम

लघु आलेख

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम

बच्चो, आइस्क्रीम तो तुम्हें पसंद होगी, है न? ठंड़ी–ठंड़ी तथा जायेकदार। जन्मदिन की पार्टी हो या शाम को होने वाला सैर–सपाटा, तुम्हारी नजर आइस्क्रीम पर ही रहती है, किन्तु क्या तुम जानते हो कि सबकी चहेती आइस्क्रीम कैसे बनी? वैसे इसके संदर्भ में भांति–भांति की चर्चाएं प्रचलित है तथा कहा जाता है कि शुरुआत संयोगवश ही हुई होगी। किसी व्यक्ति का दूध से भरा प्याला सर्दी में बाहर रह गया होगा। सुबह जब उसने दूध को जमा हुआ देखा होगा, तो खाने पर उसे जायका पसंद आया होगा। बस! तभी से लोगों ने दूध को जमाकर खाना प्रारंभ कर दिया होगा।

कहा जाता है कि सबसे पहले आइस्क्रीम बनाने का नुस्खा रोम के सेनापति क्विंटस मैक्सिमस ने निर्मित किया। किंतु रोम साम्राज्य के पतन के साथ ही आइस्क्रीम का भी पतन हो गया। इस समय चीन में आइस्क्रीम काफी लोकप्रिय थी। १३वीं शताब्दी में इटली यात्री मार्को पोलो ने चीन की राजधानी पीकिंग की यात्रा की।

१२९५ में वापसी में वह अपने साथ आइस्क्रीम बनाने की विधि भी ले गया। सन् १५३३ में इटली की राजकुमारी कैथरीन दिमिदिची ने फ्रांस के राजकुमार हैनरी द्वितीय से विवाह किया तथा दहेज में अपने साथ आइस्क्रीम बनाने का साजो समान तथा विधि भी ले गई। इस भांति जायेकदार आइस्क्रीम इटली से फ्रांस पहुंची।

सन् १६८५ में फ्रांस के राजा हैनरी चतुर्थ की पुत्री ने इंग्लैण्ड के राजकुमार चार्ल्स से विवाह किया। उसके साथ आइस्क्रीम बनाने की विधि इंग्लैण्ड जा पहुंची। १७०० आते–आते आइस्क्रीम खूब लोकप्रिय हो गई। सन् १६८० में इटली निवासी कल्टैली ने एक छोटी सी मशीन बनवाई जिसमें कृत्रिम रूप में बर्फ तैयार होती थी। तत्पश्चात् १८४६ में अमेरिका विज्ञानी नैंसी जानसन ने इस मशीन में कुछ और सुधार किया। १८५१ में उत्तरी अमेरिका के मैरीलैण्ड राज्य के जैकब फसेल ने व्यावसायिक स्तर पर आइस्क्रीम का उत्पादन प्रारंभ कर दिया।

भारत में आइस्क्रीम मुगलकाल में ही प्रचलन में थी, किंतु उस समय विशेष लोग ही इसके स्वाद का आनंद उठा पाते थे। अकबर हिमालय की चोटियों से बर्फ मंगवाकर आइस्क्रीम बनवाया करता था। हजरत सुलेमान, सिकंदर, नीरो जैसे राजा भी आइस्क्रीम के दीवाने थे।

आज आइस्क्रीम बनाने की तकनीक अत्याधिक विकसित हो चुकी है तथा अनेक भांति के फ्लेवर बाजार में उपलब्ध हैं। अमेरिका में तो २५० तरह के स्वादों की आइस्क्रीम मिलती है। जब से घर में फ्रिज आए हैं तब से तो घर में ही आइस्क्रीम जमाई जा सकती है। तो फिर देर किस बात की, हो जाओ तैयार आइस्क्रीम जमाने के लिए तथा माँ से कहो कि आवश्यक सामान दे दें तथा साथ ही बता दें कि इसे कैसे जमाया जाता है?

● कानपुर (उ.प्र.)

दूर दूर से आता आम

● केशरीप्रसाद पाण्डेय 'बृहद्'

रूप अनेकों रंग अनेकों,
स्वाद अनेकों देता आम।
कोई कजली कोई चौसा।
लंगड़ा कहलाता कोई आम।
आमचूर से ले अचार तक,
ख्याति प्राप्त हो जाता आम।
कोई दक्षिण कोई उत्तर,
पूरब से कुछ आता आम।
नहीं सिर्फ है फलों का राजा
फल राष्ट्रीय कहलाता आम।
सेहत, स्वाद रेसिपी के गुण।
सीजन भर ललचाता आम।
महाराष्ट्र और हापुर शहर से।
आता तोतापरी है आम।
दक्षिण पूरब आंध्र प्रदेश है,
वही से नीलम आता आम।
केशर है गुजरात प्रान्त का
फजली वाराणसी का आम।
लंगड़ा और दशहरी चोंसा
उत्तर प्रदेश लखनऊ का आम
सुबह शाम महफिल बैठाता
दूर दूर से आता आम।

– जबलपुर (म.प्र.)

यंत्रलोक से वापस आओ

● प्रमोद सोनवानी 'पुष्प'

लदे हुए हैं डाल-डाल पर,
कुछ खट्टे-कुछ मीठे आम।
अमराई में चलो चले हम,
मारें पत्थर तोड़ें आम।।

छोड़ो जी ये विडियो गेम,
कम्प्यूटर का छोड़ो काम।
इन यंत्रों में खो जाओगे
सोचो, कब खाओगे आम।।

इसीलिए कहता हूँ बच्चो,
यंत्रलोक से वापस आओ।
अमराई भी सजी-धजी हैं,
ता-ता थैय्या नाचो गाओ।।

– तमनार (छ.ग.)

कल्पना अनेक

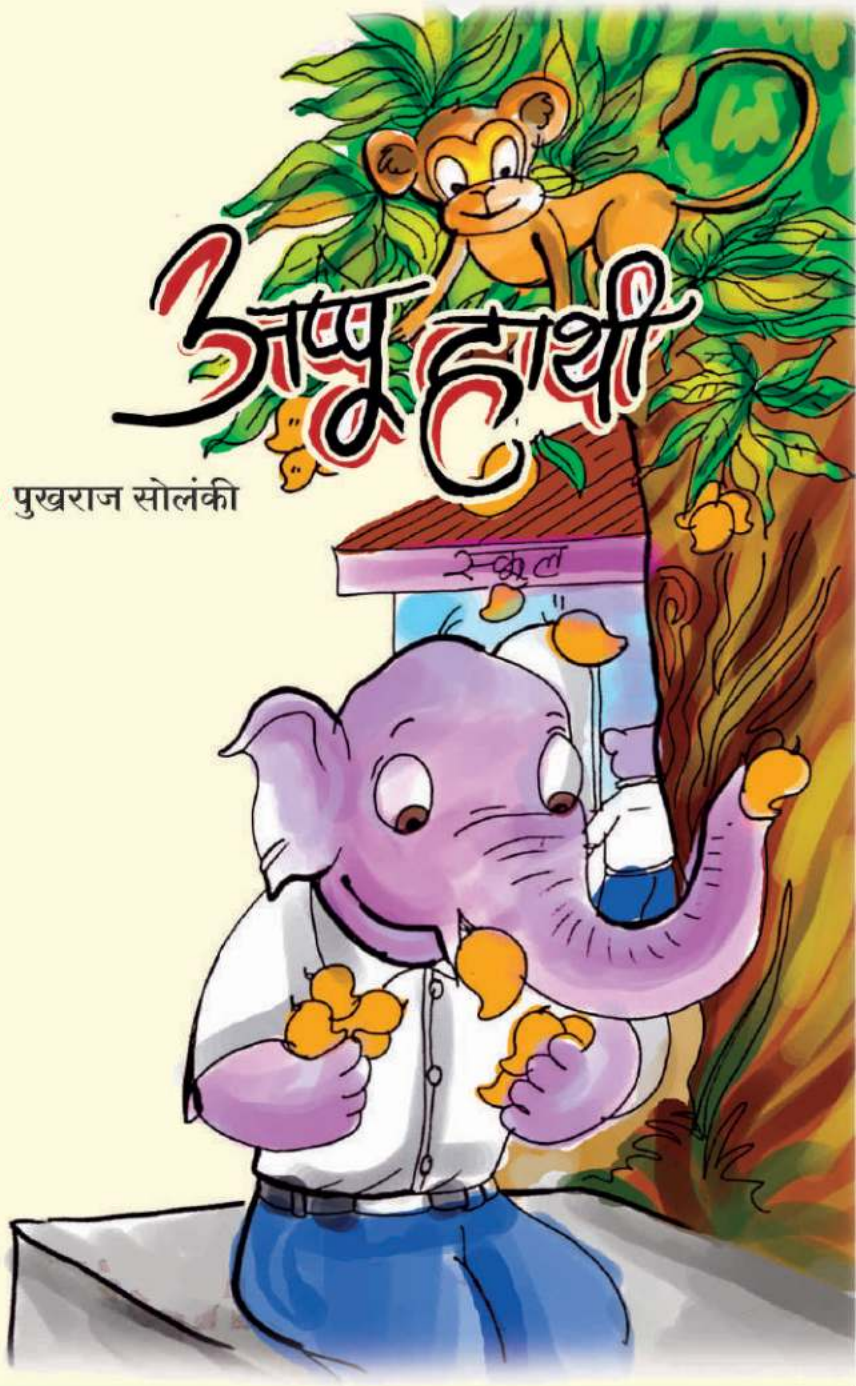

● पुखराज सोलंकी

अप्पू हाथी स्कूल चला
टिफिन घर पे भूल चला
भूख लगी नानी याद आई
कैसे करेगा अब पढ़ाई
चूहे कूद रहे उसके पेट में
भालू चपरासी खड़ा गेट पे
अगड़म बगड़म मिल जाये
खाने का तिगड़म मिल जाये
सोच रहा था उदास बैठ के
इक दरख्त के पास बैठ के
दरख्त पे कुछ बन्दर आये
उछलकूद में आम गिराये
आम सभी थे बड़ी रसीले
कुछ हरे थे कुछ थे पीले
आम उठा कर लगा चूसने
अपनी मस्ती में लगा झूमने
अप्पू अपनी भूख मिटाकर
पढ़ने लगा क्लास में जाकर

– भीनासर (राज.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'आम' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

रैंचो का घर

कहानी

संजीव जायसवाल 'संजय'

रैंचो हाथी अभी छोटा था। एक दिन घूमने निकला तो रास्ता भूल गया। भटकते–भटकते वह दूसरे जंगल में पहुंच गया। धीरे–धीरे शाम हो गयी। आसमान में बादल छा गये। हवा भी तेज बहने लगी।

अब तो रैंचो घबराया। उसने एक घर का दरवाजा खटखटाया। वह डिम्पी हिरण का घर था। रैंचो ने उससे कहा, ''भाई! मैं रास्ता भूल गया हूँ। तूफान आने वाला है। कृपया आज रात हमें अपने घर में शरण दे दीजिए।''

''मैं तुमको अपने घर मे जरूर रख लेता मगर मजबूरी है। मेरा घर छोटा है और तुम बहुत बड़े। अगर मेरे घर में घुसोगे तो वह टूट जायेगा।'' डिम्पी ने मजबूरी जताई।

रैंचो ने कई घरों के दरवाजे खटखटाये लेकिन सभी ने उसे अपने घर में रखने से मना कर दिया। अंधेरा बढ़ने के साथ उसकी घबराहट भी बढ़ती जा रही थी। थोड़ी दूरी पर एक बड़ा सा घर बना हुआ था। शायद यहाँ शरण मिल जाए। यह सोच रैंचों ने दौड़ कर उसका दरवाजा खटखटाया तो खिड़की से जैकी भालू ने बाहर झांका। रैंचों ने उससे हाथ जोड़ कर मदद मांगीं।

जैकी ने रैंचो को ऊपर से नीचे तक देखा फिर बोला, ''भाई, मैं बाहर आ जाता हूँ। तुम घर के भीतर देख लो। अगर मतलब भर की जगह लगे तो भीतर आ जाओ।''

रैंचो ने भीतर झांका। जैकी का घर बड़ा तो था लेकिन उसमें रैंचो का घुस पाना मुश्किल था।

अब तक अंधेरा गहरा हो गया था। जैकी के घर में भी शरण न मिल पाने पर रैंचों फूटफूट कर रोने लगा, ''मैं इतना मोटा हूँ कि कोई मेरी मदद नहीं कर रहा। माँ–पिताजी आप ने मुझे इतना मोटा क्यों बनाया?''

''कौन कहता है कि तुम मोटे हो। तुम तो बहुत प्यारे बच्चे हो। बड़े होकर बहुत ताकतवर बनोगे और सबकी खूब मदद करोगे।'' तभी जैकी ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

''लेकिन दादा, अभी तो कोई मेरी मदद नहीं कर रहा।'' रैंचों ने सिसकियाँ भरीं।

''कौन कहता है कि कोई तुम्हारे जैसे अच्छे बच्चे की मदद नहीं कर रहा ''जैकी हल्का सा हँसा फिर रैंचो का हाथ पकड़ते हुए बोला, ''पीछे मुड़कर देखो क्या हो रहा है?''

रैंचों पीछे मुड़ा तो आश्चर्य से भर उठा। जंगल के जानवर इतनी देर में कई बाँस ले आये थे। बंटी बंदर दो पेड़ों के बीच उन बाँसों को बांध रहा था। स्वीटी मैना की सहेलियां जंगल से तिनके चुन–चुनकर ला रही थीं। स्मार्टी बया के दोस्तों की टोली उन तिनकों से छप्पर बुनने में जुटी हुई थी।

चकमक जुगनू के दोस्तों की पूरी फौज वहाँ जमा हो रोशनी बिखेर रही थी ताकि अंधेरे में काम न रुकने पाये। डिम्पी हिरण अपने बेटे के साथ दौड़–दौड़ कर सबके लिए खाने का सामान ला रहा था ताकि कोई थकने न पाये।

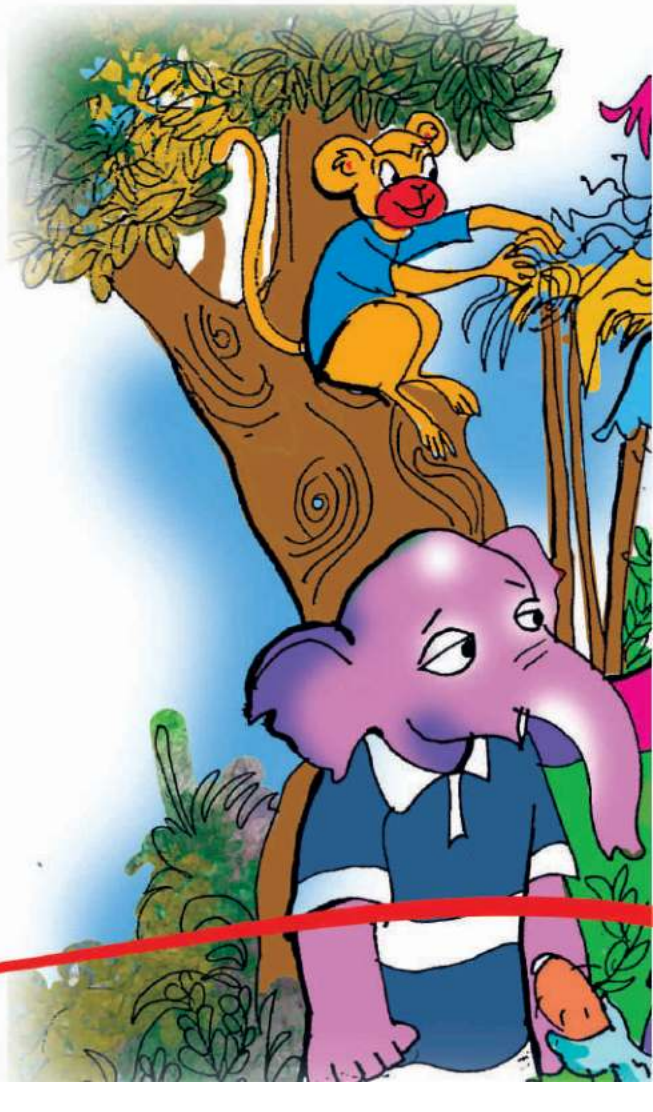

थोड़ी ही देर में रैंचों के रहने भर का घर तैयार हो गया। जैकी इस बीच ढेर सारे गन्ने ले आया था। उन्हें रैचों को देते हुए बोला, ''तुम इन्हें खाकर आराम से सो जाओ। कल सुबह मैं तुम्हें तुम्हारे घर तक पहुँचा आऊँगा।''

''आप लोग बहुत अच्छे हैं'' रैचों ने कहा।

''तुम भी तो बहुत अच्छे हो'' बंटी बंदर ने कहा फिर ढेर सारे आम रखते हुए बोला, ''गन्ना खाने के बाद मेरे पेड़ के आम भी खा लेना। ये जैकी दादा के गन्नों से कम मीठे नहीं होंगे।''

''लो मेरे खेत के गाजर भी खा लो। यह भी बहुत मीठे हैं'' तभी चीकू खरगोश ढेर सारे गाजर ले आया।

सबका प्यार देख रैंचों की आँखें भर आयीं। जैकी ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए पूछा, ''माँ की याद आ रही है?''

''हाँ'' रैंचो ने सिर हिलाया।

''खा-पीकर सो जाओ। सपनों में माँ जरूर आयेंगी।'' जैकी ने उसकी पीठ थपथपायी।

रैंचो काफी थक गया था इसलिए जल्दी ही सो गया। आसमान में बादल गरजने लगे थे और हवा भी तेज हो गई थी। रैंचों कहीं डर कर जाग न जाये इसलिए जैकी रात भर वहीं बैठा रहा।

सुबह जब रैंचों की नींद खुली तो आसमान साफ था। उसने हाथ उठाकर अंगडाई ली। लंबी-लंबी सांसें भरीं फिर सामने देखा तो चौंक पड़ा। जैकी एक बाँस से पीठ टिकाए वहीं बैठा था। उसकी आँखें नींद से भरी थीं।

''दादा, आप रात भर यहीं बैठे रहे?'' रैंचो आश्चर्य से भर उठा।

''हाँ'' जैकी मुस्कुराया।

''लेकिन क्यों?''

''मेरा नन्हा सा मेहमान अकेले में कहीं डर न जाये इसलिए '' जैकी हल्का सा मुस्कुराया फिर बोला, ''अब फटाफट तैयार हो जाओ। जल्दी से तुमको तुम्हारे घर तक पहुँचा आऊँ।''

''आप बहुत अच्छे हैं। अब जल्दी से सारे दोस्तों को बुला दीजिए ताकि मैं सबको धन्यवाद दे सकूँ।'' रैंचों ने कहा।

''हमें तुमसे धन्यवाद नहीं बल्कि एक वादा चाहिए।'' तभी बंटी बंदर ने वहाँ आते हुए कहा। उसके साथ डिम्पी हिरण और दूसरे दोस्त भी आ गए थे।

''कैसा वादा?''

''यही कि जब भी कोई दूसरा मुसीबत में होगा तुम उसकी मदद जरूर करोगे'' डिम्पी हिरण ने कहा।

''मैं वादा करता हूँ'' रैंचो ने कहा।

''पक्का वादा'' जैकी ने अपना हाथ आगे बढाया।

''पक्का'' रैंचो ने अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया। जैकी ने उसकी पीठ थपथपाई फिर उसे लेकर चल दिया।

''दोस्तो! मैं अपनी माँ-पिताजी को लेकर तुम सबसे मिलने आऊँगा।'' रैंचो ने पीछे मुड़ते हुए हाथ हिलाया।

''हम सब तुम्हारा इंतजार करेंगें।'' सभी दोस्तों ने एक साथ कहा।

रैंचो अपने घर की ओर चल दिया। उसके नये दोस्त देर तक हाथ हिलाते रहे।

● लखनऊ (उ.प्र.)

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

नागालैण्ड का राज्य वृक्ष

भिदुर

• डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत के उत्तर-पूरब में,
सभी जगह मिल जाता।
चीन, पाक, जापान आदि से,
इसका गहरा नाता।
उपजाऊ मिट्टी के इसमें,
तत्व अनोखे रहते।
अंग्रेजी में भारत वाला,
इसे आल्डर कहते।
सीधा तना तीस फुट ऊँचा,
पौधा पतझड़ वाला।
नदी किनारे जल्दी उगता,
पानी देख निराला।
भूमि क्षरण को रोक वृक्ष यह,
काम हमारे आता।
सीढ़ी वाले खेतों की यह,
बहती भूमि बचाता।
छाल, बीज, फल-फूल आदि से,
औषधि खूब बनाते।
और काट कर लकड़ी इसकी,
घर में रोज जलाते।।

• भोपाल (म.प्र.)

टूट गया भरोसा

लघु कहानी

दिनेश विजयवर्गीय

एक गाँव था सोमपुरा। वहाँ के लोगों का जीवन खेती पर ही निर्भर रहता था। गाँव में एक सेठ थे कनकमल। उनके पास गांव में कई खेत थे। वह लोगों को जरूरत अनुसार लेन–देन कर सहयोग करते थे।

सेठ का एक खेत गाँव के एक छोर पर भी था। उसमें गांव का ही उनका एक परिचित रामेश्वर खेती करता आ रहा था। खेती की उपज का आधा हिस्सा सेठ उसे दिया करता था। दोनों आधा–आधा हिस्सा लेकर संतुष्ट रहते।

एक बार जीरे की खेती की गई। समय पर फसल तैयार हुई। फसल को लेकर रामेश्वर ने सेठ जी के घर के आँगन में दो समान ढेर बना कर रख दिये। और एक ढेर जीरे के कचरे का बना कर रख दिया।

सेठ जी के मुँह बोले एक चालाक केशव ने, जो रामेश्वर से कटुता रखता था, उसने सेठ से कहा कि ''जीरे के कचरे वाले ढेर में नीचे अच्छा जीरा जमा रखा है, जिसे वह अपने हिस्से के जीरे के साथ घर ले जाएगा।''

केशव की बात से भ्रमित हुआ सेठ आँगन में लगे जीरे के ढेर को देखने गया। वह जीरे के दोनों समान ढेरों को छोडकर उस कचरे वाले ढेर को ध्यान से देखने लगा। सच्चाई परखने के लिए उसने अपनी छड़ी से उस ढेर में घुमा–घुमाकर देखता रहा।

पहली बार सेठ की इस अविश्वसनीय हरकत देख रामेश्वर दंग रह गया। उसे लगा सेठजी का सदा की तरह मुझ पर भरोसा नहीं रहा। इस बार जरूर मन में कोई खोट है। तभी वह उठा और कचरे के ढेर को हाथों से बिखेर दिया। लेकिन ढेरे में तो बस कचरा ही था। उसी कचरे में रामेश्वर कुछ ढूंढने की कोशिश करने लगा।

सेठ ने पूछा– ''रामेश्वर ! क्या तलाश रहे हो, क्या कुछ गुम गया । रामेश्वर ने सेठ की ओर देख कर कहा– ''मैं भरोसा ढूंढ रहा हूँ। जो सदा हमारे बीच बना रहता था। अब मैं आगे से अपने ही छोटे खेत में खेती करूँगा। यह कहते हुए वह अपने घर की ओर चल दिया।

सेठ को अपनी गलती का अहसास हो गया। उसने केशव की गलत बार पर विश्वास कर वर्षों के भरोसेमंद व्यक्ति का साथ खो दिया।

● बूंदी (राज.)

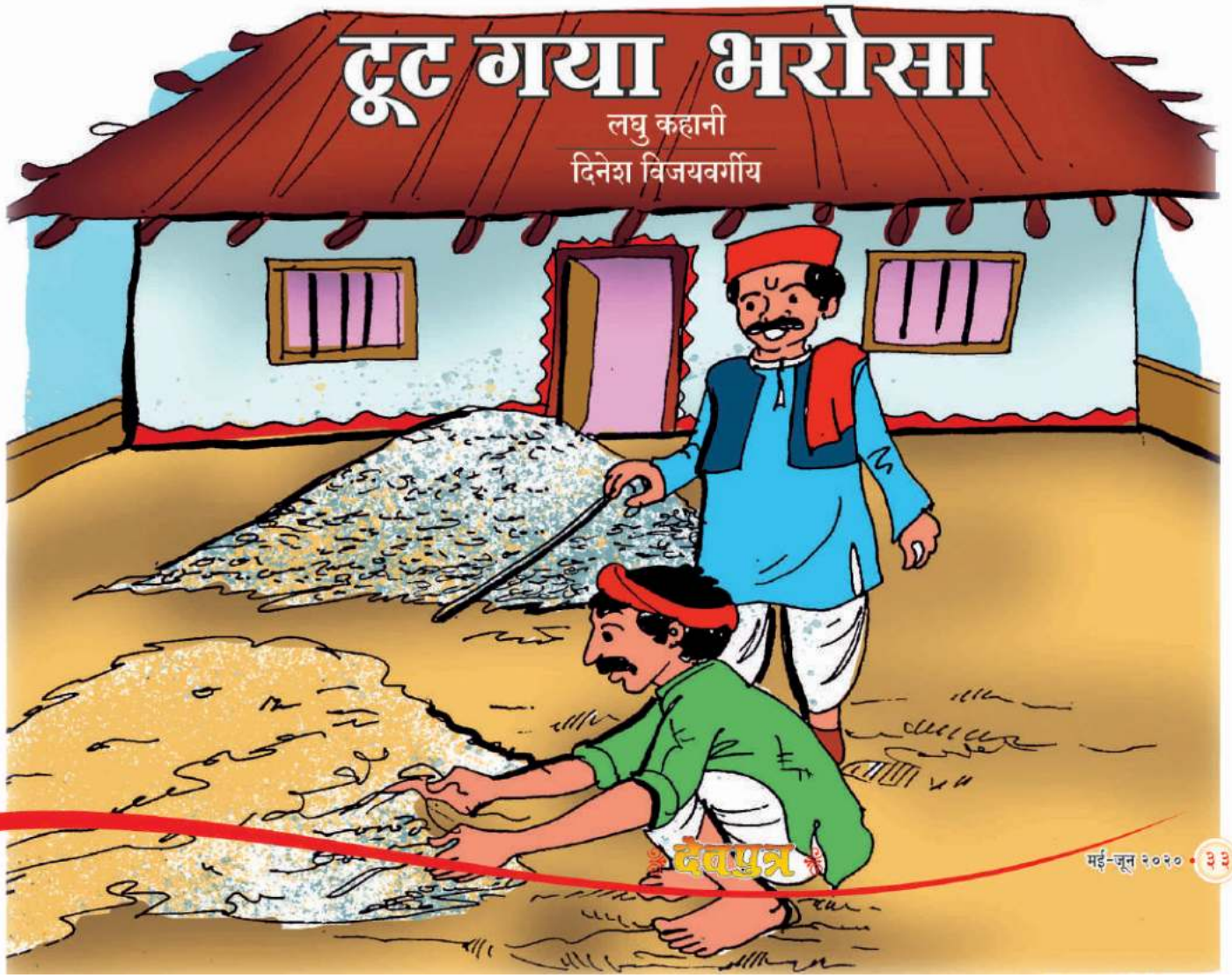

एक बीज की चाह

कविता

मेराज रजा

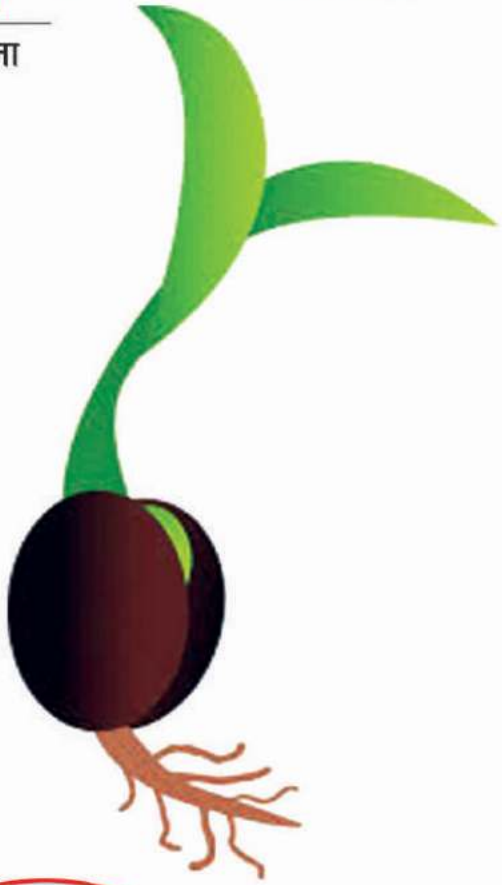

दाना हूँ मैं नन्हा-मुन्ना,
मिट्टी में हूँ गड़ा-गड़ा
कैसे होगी दुनिया बाहर,
सोच रहा हूँ पड़ा-पड़ा।
मीठा-मीठा पानी पीकर,
अंकुर मैं बन जाऊँ।
बढ़िया खाद मिले तो खाकर,
खिल-खिलकर मुस्काऊँ
बाहर आकर धीरे-धीरे,
बड़ा पेड़ बन जाऊँ।
नीले-नीले अंबर नीचे,
हवा संग लहराऊँ।
नन्हीं चिड़िया मेरे ऊपर,
अपना नीड़ बनाए।
सुंदर मीठे गीत सुनाकर,
मेरा मन बहलाए।
तपती गर्मी से थककर जब,
राहगीर भी आए।
शीतल-शीतल छाया पाकर,
खुश तुरंत हो जाए।
तेज हवा के झोंके खाकर,
मीठे फल बरसाऊँ।
मेरे पास चले जब आओ,
तुमको खूब खिलाऊँ।

- बजिदपुर (बिहार)

आपकी पाती

देवपुत्र पत्रिका के माध्यम से आपका स्नेह बराबर बना हुआ है, इसके लिए हृदय से आभारी हूँ।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री पढ़कर न केवल बच्चे संस्कारवान होते हैं अपितु हमें भी जीवन में बहुत कुछ सीखने, समझने का अवसर मिलता रहता है।

आप सभी का समर्पण एवं सद्प्रयास स्तुत्य है इसके लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकारें। जनवरी २०२० अंक में शामिल रचनाएं भी सदैव की तरह प्रभावी हैं।

पुनः हार्दिक शुभकामनाओं के साथ...

● महावीर रवांल्टा, उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)

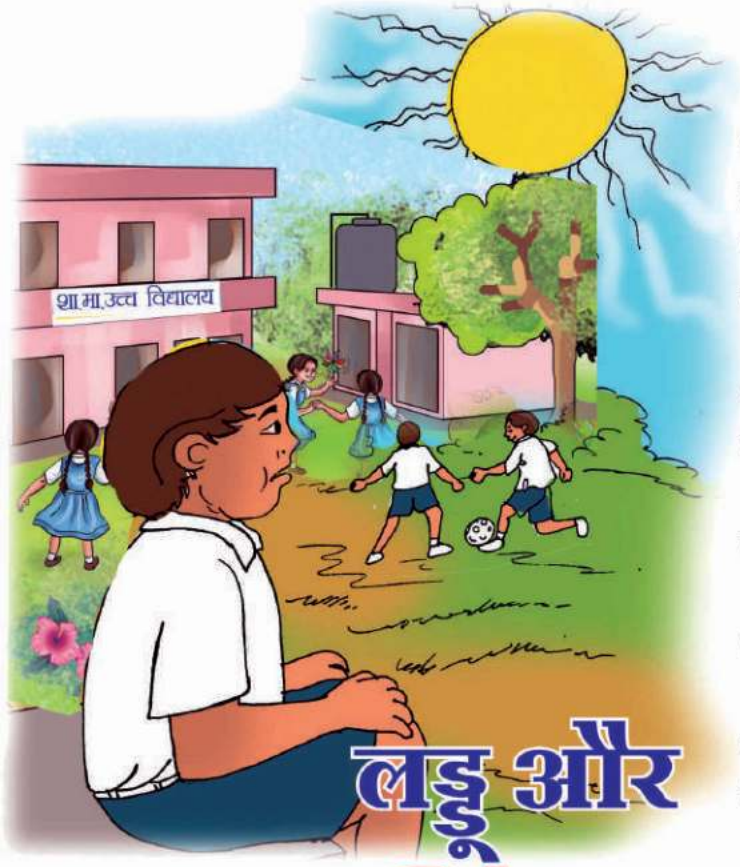

लड्डू और पसीने का सच

कहानी

इंजी. आशा शर्मा

गोलमटोल लड्डू घर में सबका दुलारा है। दादी हो या नानी, सब उसे जिद कर कर के खिलाते हैं। माँ भी जब तब उसके लिए केक–पुडिंग बनाती रहती है और पिताजी तो हर रोज ही कार्यालय से आते हुए कभी चिप्स तो कभी कोल्डड्रिंक लेकर आते हैं।

इस सारे लाड़ प्यार का नतीजा ये हुआ कि टेनिस की गेंद सा लड्डू मुटा कर फुटबॉल सा गब्दू हो गया। नए लाये हुए कपड़े दो तीन महीने में ही तंग होने लगे, और तो और इन दिनों तो लड्डू आलसी भी बहुत हो गया था। न तो दोस्तों के साथ बाहर खेलने जाता है और ना ही विद्यालय के खेल के मैदान में खेलता है। कभी कभार खेल के आचार्य की डांट से बचने के लिए जब वो खेल के मैदान में जाता है तो बच्चे उसका बहुत मजाक उड़ाते हैं, क्रिकेट में उसे कोई भी अपनी टीम में नहीं लेना चाहता क्योंकि न तो वह दौड़ कर रन बना सकता है और ना ही लपक कर कैच पकड़ सकता है। फुटबॉल खेलते समय तो उसे देखकर बच्चों का हँस–हँस कर बुरा हाल हो जाता है।

''देखो–देखो! छोटे फुटबॉल के पीछे बड़ा फुटबॉल भाग रहा है।'' कह कर सब उसे चिढ़ाते हैं। लड्डू को बुरा तो बहुत लगता है लेकिन जैसे ही वह अपना लंच बॉक्स खोलता... मनपसंद खाना देखते ही सब कुछ भूल जाता...गुस्से के मारे तो दो निवाले ज्यादा ही खा जाता।

आज लड्डू बहुत खुश था। उसके विकास काका जो आने वाले थे। पिताजी ने बताया था कि काका यहाँ परीक्षा देने के लिए आ रहे हैं। सुबह–सुबह पिताजी की आवाज से उसकी नींद खुल गई।

''अरे विकास! तुम तो बिलकुल हीरो लग रहे हो। क्या देह बना रखी है..भई वाह!'' पिताजी ने काका को गले लगाते हुए कहा।

''काका! मुझे भी आप जैसा शरीर बनाना है। बताइए ना... क्या करते हो?'' अब तक लड्डू भी उठकर उनके पास आ गया था।

''अरे लड्डू राजा! देह यूँ ही नहीं बनती... इसके लिए कसरत करके पसीना बहाना पड़ता है... समझे...'' काका ने उसके गाल थपथपाते हुए कहा।

''तो क्या पसीना बहाने से शरीर को फिट बना सकते हैं? लड्डू ने आश्चर्य से पूछा।

''हाँ– हाँ! बिल्कुल बना सकते हैं।'' विकास ने कहा और नहाने चला गया।

''पसीना बहाने से शरीर को फिट बना सकते हैं।'' लड्डू के दिमाग में बात फिरकी की तरह घूमने लगी।

विद्यालय में सबसे पहला कालखण्ड खेलकूद का होता है। रोज की तरह आज भी सब बच्चे अपनी अपनी पसंद के खेल खेलने लगे। लड्डू एक तरफ धूप में जाकर बैठ गया। आधा घंटा लड्डू इसी तरह धूप में बैठा पसीने–पसीने होता रहा। दूसरे दिन भी यही हुआ और फिर तीसरे दिन भी...

आज चौथा दिन है। धूप कुछ ज्यादा तेज है। आज सब बच्चे इनडोर गेम्स खेल रहे हैं। लड्डू अकेला धूप में बैठा हैं। उसकी शर्ट पसीने से पूरी तरह से गीली हो चुकी थी। गला प्यास के मारे सूखने लगा। अचानक उसकी आँखों के आगे अंधेरा सा छा गया। उसे चक्कर आया और वह बेहोश हो गया। खेल के आचार्य उसे अस्पताल लेकर भागे।

''लू का मामला लगता है।'' डॉक्टर ने जाँच करके बताया और उसे आवश्यक उपचार दिया। थोड़ी ही देर में उसे होश आ गया।

''लड्डू! ये क्या पागलपन था? तुम बाहर तेज धूप में क्यों बैठे थे?'' आचार्य जी ने नाराजगी से पूछा।

''मैं पसीना बहाकर अपना वजन कम करना चाहता था। मेरे काका ने भी पसीना बहाकर स्वयं को फिट किया है।'' लड्डू भोलेपन

से बोला।

''लड्डू बेटा! वजन धूप में पसीना बहाने से नहीं बल्कि मेहनत और कसरत करके पसीना बहाने से कम होता है, समझे?'' आचार्य जी ने कहा।

''लेकिन आचार्य जी पसीना तो धूप में भी बहता है ना! फिर दोनों में फर्क कैसे हुआ?'' लड्डू को अभी तक अपनी गलती समझ में नहीं आई थी।

''देखो लड्डू हमारे शरीर का सामान्य तापमान ३७ डिग्री सेल्सियस होता है। जब हम तेज धूप में होते हैं तब शरीर का तापमान बढ़ने लगता है। उसे वापस सामान्य तापमान में लाने के लिए हमारा शरीर पसीना निकालता है। वहीं जब हम कसरत करते हैं तब हम अपनी शरीर से सामान्य से अधिक कार्य करवाते हैं यानी उसकी अतिरिक्त ऊर्जा का उपयोग करते हैं। इस तरह से जो पसीना निकलता है वह कैलोरी के खर्च होने से निकलता है। तो हुए ना दोनों अलग?'' आचार्य जी ने उसे विस्तार से समझाया तो लड्डू का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया।

''तो क्या मैं हमेशा ऐसे लड्डू सा ही रहूँगा... कभी चुस्त-दुरुस्त नहीं बन सकूंगा...'' लड्डू निराश हो गया।

'' बिलकुल नहीं। अगर तुम भी ठान लो तो दुनिया की कोई ताकत तुम्हें ऐसा बनने से नहीं रोक सकती। बस पसीना धूप में नहीं बल्कि कैलोरी जलाकर निकालना है... नियमित खेलकूद और संतुलित भोजन... यही तुम्हें फिट रखने के लिए काफी हैं... और हाँ! जंक फूड की जगह ताजा फल और हरी सब्जियाँ खानी होंगी... करोगे ना ये सब... वैसे कभी-कभी जंक फूड भी खा सकते हो लेकिन सीमित मात्रा में ही...'' आचार्य जी ने हँसते हुए कहा।

''करूँगा सर, जरूर करूँगा... कल से मैं भी सबके साथ खेलकूद में भाग लूँगा... किसी के चिढाने से भी बुरा नहीं मानूँगा...'' लड्डू ने आचार्य जी से वादा किया।

''शाबाश लड्डू'' कह कर आचार्य जी ने भी प्यार से उसकी पीठ थपथपाई।

● बीकानेर (राज.)

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

गोपी ने मोहन के बारे में राजन से कहा - 'इसके पापा की सासू माँ मेरे पापा की भाभी की भी सासू माँ है।' गोपी और मोहन आपस में रिश्ते में क्या लगेंगे?

(उत्तर इसी अंक में)

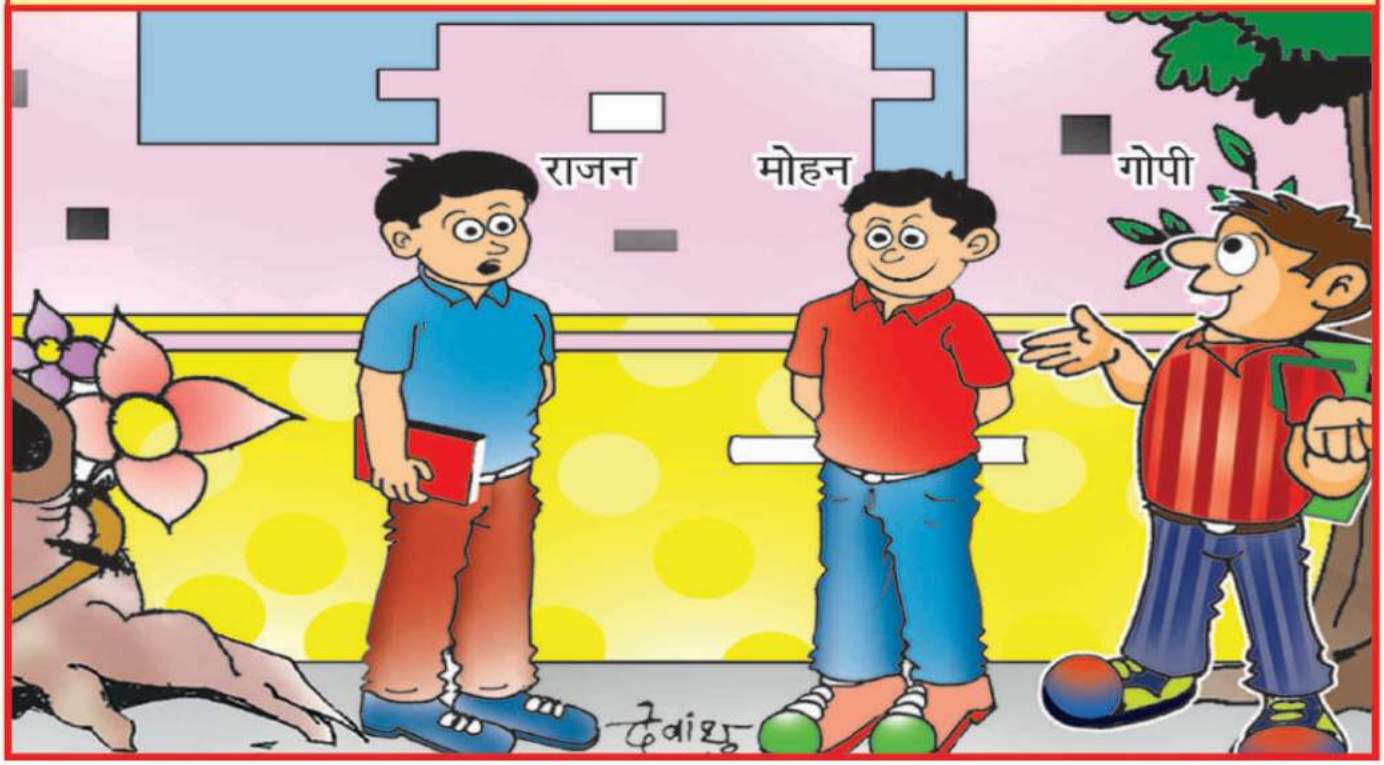

शब्द चित्र

● राजेश गुजर

हनुमान

शोक संदेश

बच्चो! आपके लिए ऐसे शब्द चित्र एवं ढेरों मनोरंजक सामग्री हर अंक में प्रस्तुत करने वाले कुशल चित्रकार श्री राजेश गुजर अब हमारे बीच नहीं रहे। वे वर्षों से हमारे साथ जुड़े रहे, कई कार्यशालाएँ की। अपने ऐसे अनन्य सहयोगी मित्र कलाकार को खोकर हम अत्यंत दुखी मन से उन्हे सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

– देवपुत्र परिवार

सही उत्तर :

संस्कृति प्रश्नमाला – अक्षय कुमार, कुरूक्षेत्र (हरियाणा), विष्णु मंदिर, त्रिपुरा, दधीचि, चक्रध्वज सिंह, त्रुटि (१०^{१८}) रामजीदास गुड़वाले, नाहरसिंह, माँ शिवमूर्ति सरस्वती

उलझ गए – मोहन गोपी का फुफेरा भाई है।

कविता

रामकरन

नींद परी

चाँद तारों का शामियाना,
रात बुने जब ताना बाना।
साँझ ढली हो जुगनू भरी,
हौले से आना नींद परी।
आना, आना, पलकों में आना,
फिर बन जाता स्वप्न सुहाना
लाना, लाना, जादू-छड़ी।
होले से आना नींद परी।
खेल खिलौने भर भर लाना,
बिन बोले तुम घर में आना।
लाना पिटारा भरी भरी,
हौले से आना नींद परी।
जादू से इक बाग बनाना,
रंग-रंग के फूल खिलाना।
मिल सब गायें स्वर लहरी,
हौले से आना नींद परी।

● मिश्रौलिया (उ.प्र.)

साहसी रमन

कहानी

नीरज कुमार मिश्रा

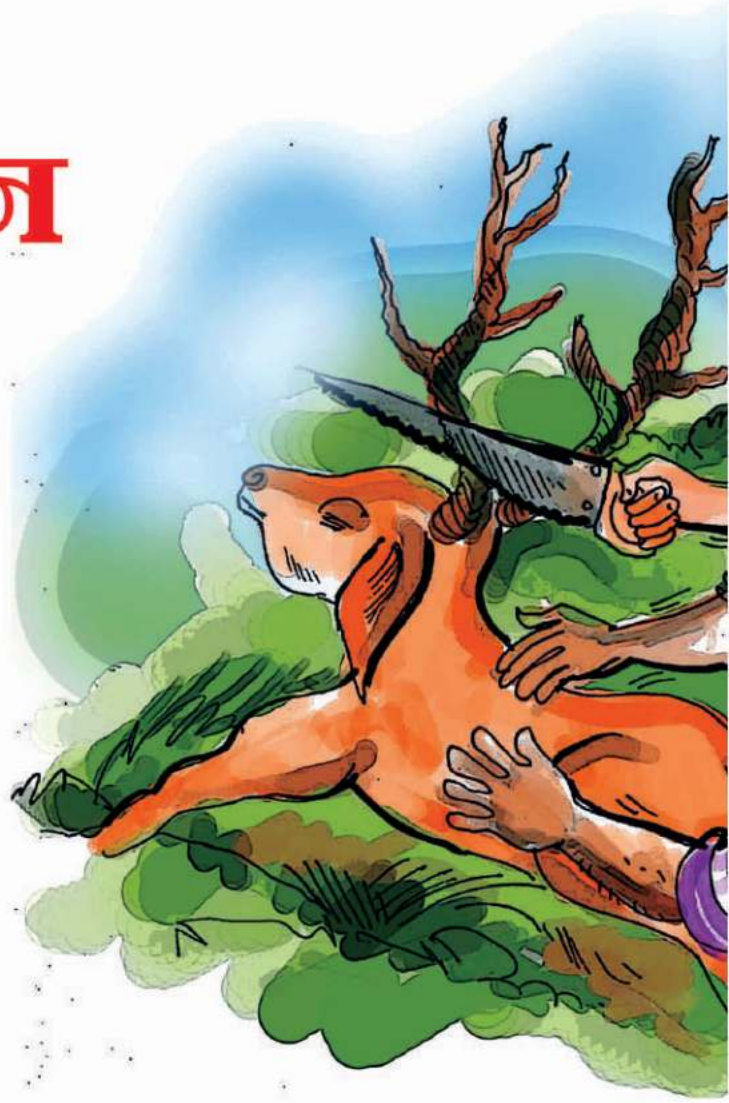

''आज से ठीक दो दिन के बाद नवीं कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा के छात्र एक वनयात्रा पर जायेंगे। इस यात्रा में हम लोग सोनपुर के जंगलों में जाएंगे, जिससे हमें प्रकृति के और नजदीक जाकर उसे महसूस करने का मौका मिलेगा, और जीव जंतुओं में रहन–सहन का अंदाजा भी मिलेगा।'' विद्यालय के एनसीसी के शिक्षक घोष साहब ने घोषणा की तो सभी छात्र खुशी से झूम उठे।

रमन भी वनयात्रा पर जाने की बात सुनकर बहुत खुश हो रहा था, घर पहुँचते ही उसने यह बात अपने माँ–पिताजी को बताई तो उन्होंने भी हँसी–खुशी उसे जाने की आज्ञा दे दी।

सभी बच्चे वनयात्रा वाले दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।

अखिरकार वो दिन भी आ ही गया जिसका सबको इंतजार था, सभी बच्चे यात्रा के हर्ष में एक घण्टे पहले ही विद्यालय में पहुँच गए। सभी बच्चों ने अपना अपना सामान बस के पीछे की डिग्गी में रख दिया और अपनी सीटों पर आकर बैठ गए।

कुछ समय के इंतजार के बाद घोष साहब भी आकर बस में बैठ गए और बस को कूच करने का आदेश दिया।

नियत समय पर बस चल पड़ी, बस के चलते ही बच्चों ने भारत माता की जय का जोरदार नारा लगाया और सभी बच्चे यात्रा के नए अनुभव से रोमांचित होने लगे।

करीब दो घण्टे की यात्रा के बाद बस सोनपुर रेंज में पहुचने लगी।

हरियाली से भरे जंगल और ऊँचे–ऊँचे पहाड़ दिखाई देने लगे।

जंगल में जाने पर सड़क का रास्ता खत्म हो गया इसलिए बस को वहीं छोड़कर सभी ने अपना सामान पीठ पर उठा लिया और टेंट तथा अन्य सामान भी आपस में मिलकर उठा लिया।

घोष साहब ने बताया की हमे अपना तंबू किसी नदी के आसपास लगाना होगा। बारहवीं कक्षा के एक छात्र प्रजापति ने मोबाइल पर गूगल मैप की सहायता से नदी की स्थिति पहले से ही ज्ञात कर ली थी, अतः सबने उसी नदी के किनारे अपने तंबू गाड़ दिए।

सबको जोरों की भूख लग रही थी, इसलिए अब भोजन बनाने की बारी आई तो सब आग जलाकर उसके चारों और बैठ गए।

''बच्चो! आज हम सब यहाँ एक साथ प्रकृति को

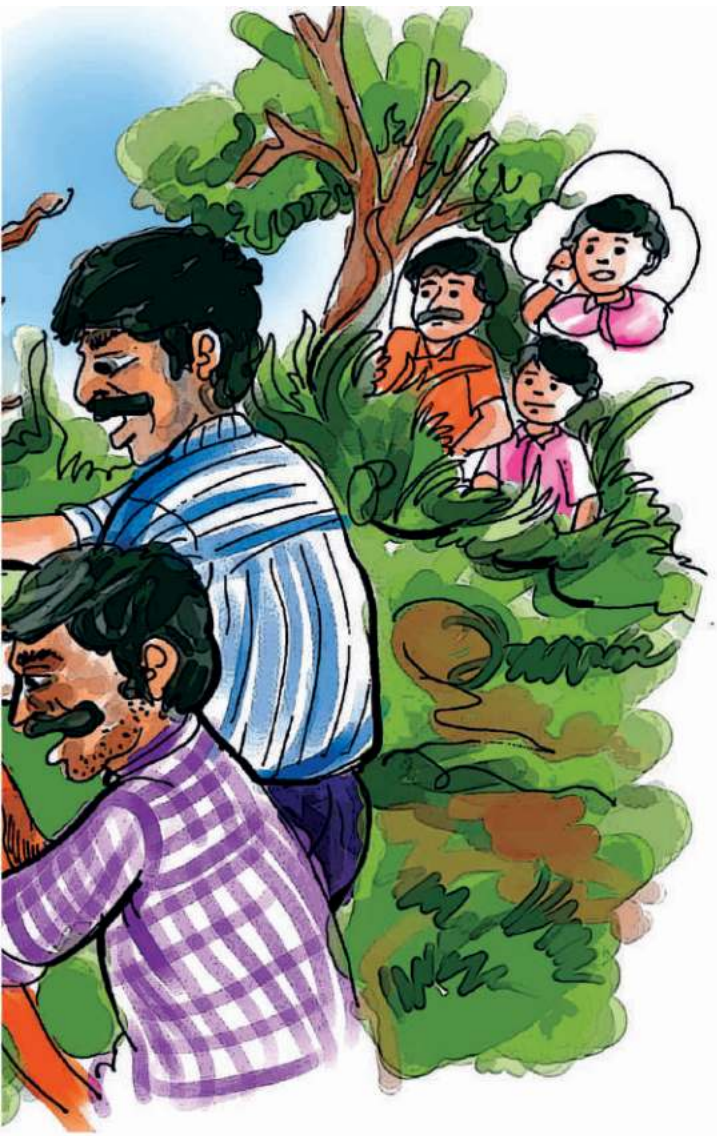

अनुभव करने आये हैं, कल हम जंगल के अंदर जायेंगे, पर आज अभी हम सब देखेंगे कि किसके अन्दर कितनी प्रतिभा है'' घोष साहब ने कहा।

फिर क्या था बारी–बारी सभी लड़के अपने अपने गुणों का प्रदर्शन करने लगे।

छात्र प्रजापति ने तकनीक के बारे में बताया कि जंगल में फसे होने पर किस तरह से बाहर निकला जाये या मोबाइल में सिग्नल न आने पर किस तरह से पुलिस को फोन करके मदद मांगी जाये।

किसी ने फिल्मी गाना सुनाया तो किसी ने जबरदस्त नृत्य दिखाया, किसी ने बांसुरी की तान छेड़ी तो किसी ने जूड़ो–कराटे के दांव दिखाये।

''अरे तुम कुछ क्यों नहीं दिखाते रमन, बड़े चुप से बैठे हुए हो?'' घोष साहब ने चुप बैठे हुए रमन से कहा।

''वो... दरअसल मुझे गाना या बजाना कुछ नहीं आता, मेरे अंदर कोई प्रतिभा नहीं है सर, मुझे माफ करें।'' रमन ने दुखी मन से कहा। अभी घोष साहब और रमन में ये बातें चल रहीं थी कि अचानक एक गोली चलने की आवाज आयी, सारे बच्चे सहम से गए।

लगता है कुछ शिकारी जंगल में घुस आए है और बेजुबानों को मारेंगे, हमे उनको बचाना होगा, कौन चलेगा मेरे साथ'' घोष सर की आवाज में किसी ने आवाज नहीं मिलायी।

कुछ बच्चे तो टेंट में जा घुसे और जूडो दिखाने वाला लड़का तो डर के मारे चादर ओढ़कर सोने का नाटक करने लगा।

''मैं चलूंगा आपके साथ, जानवरों को शिकारियों से बचाने के लिए'' जब कोई भी बच्चा घोष साहब के साथ जाने को राजी नहीं हुआ, ऐसे में रमन ने कहा।

''ठीक है रमन, मैं और तुम चल कर देखते है कि माजरा क्या है, और जब तक हम न आ जायें सारे बच्चे टेंट में ही रहेंगे, ये मेरा आदेश है'' घोष साहब ने कड़े स्वर में कहा।

रमन और घोष साहब गोली की आवाज की तरफ चल दिए, रात होने के कारण जंगल में चलने में उन्हें बड़ी तकलीफ हो रही थी और जंगली जानवरों का भी डर सता रहा था।

पर सारी बाधाओं को पार कर वो एक ऐसी जगह पहुँच गए जहाँ का दृश्य बड़ा हृदय विदारक था।

वे शिकारी थे जिन्होंने बारहसिंगा का शिकार किया था और अब वे उसकी खाल उतारने और सीगों को काट कर अलग करने का प्रयास कर रहे थे क्योंकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में इन जानवरों की खाल और सींग आदि बहुत महँगे बिकते हैं।

घोष साहब और रमन तेजी से सारा माजरा समझ गए पर वे दोनों तो निहत्थे थे और दो थे और शिकारी संख्या में भी चार और उन लोगों के पास हथियार भी थे,

रमन ने घोष साहब को उंगली से चुप रहने का इशारा किया।

रमन का दिमाग तेजी से चल रहा था, वे लोग खतरनाक थे अतः उनसे सामने से लड़ाई लेना ठीक नहीं था।

रमन को एक युक्ति याद आयी, कैसे प्रजापति ने नेटवर्क न होने पर आपतकालीन नंबर के द्वारा पुलिस तथा अन्य विशेष नम्बरों पर फोन करना बताया था, अतः रमन ने मोबाइल निकाला ओर पुलिस को फोन लगाया तथा जंगल के अधिकारियों को भी फोन लगाया।

शिकारी इन सब बातों से बेखबर खाल निकालते रहे और सींग काटते रहे, करीब तीन घण्टों के बाद पुलिस रमन के मोबाईल की लोकेशन को ढूंढकर वहाँ पहुँच गई और शिकारियों को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस के साथ रमन के बाकी साथी भी वहाँ पहुँच गए थे।

इस साहसी काम के लिए पुलिस ने घोष साहब की प्रशंसा की।

''असली प्रशंसा का अधिकारी मैं नहीं बल्कि रमन है, इसी ने साहस और बुद्धि का परिचय देते हुए इन शिकारियों को पकड़वाया है और जब सारे लड़के डर के मारे टेंट में जा छुपे तब यही एक लड़का था जिसने मेरा साथ दिया हो सकता है रमन को गाना ना आता हो, बजाना न आता हो, हो सकता है कि उसे जूडो की कला न आये पर इन कलाओं का कोई महत्व नहीं रह जाता यदि आपके पास साहस नहीं हैं।

इन कलाओं के साथ साहस सबसे जरूरी चीज है, असली कलाकार तो वही है जो सही समय पर सही काम दिखाये, इसलिए आज से रमन हमारे कैंप का लीडर है, न सिर्फ रमन ने साहस का परिचय दिया बल्कि तकनीक की जानकारी को संकट पड़ने पर बखूबी प्रयोग भी किया और जानवरों की जान भी बचाई।

सभी बच्चे रमन के साहस के लिए तालियाँ बजाने लगे और घोष साहब ने रमन की पीठ थपथपाई।

– पलियाकलां (उ.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति।।

अनार

कविता

कु. शांभवी गुप्ता

मैं हूँ राजा, मैं हूँ राजा,
मेरे सर पर भी है ताज
मैं हूँ लाल, मैं हूँ लाल,
मेरे सर पर लाल ताज।
मेरे दाने हैं डायमंड
करता नहीं कभी घमंड।

– इन्दौर (म.प्र.)

तब गर्मी नहीं लगती!

कथा: चंदा सिंह
चित्र: देवांशु वत्स

पुस्तक परिचय

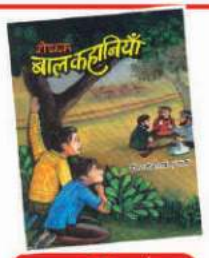

मूल्य १५०/-

रोचक बाल कहानियाँ

डॉ. सत्यनारायण 'सत्य' द्वारा ग्राम्य संस्कृति को रूपायित करती चौदह रोचक बाल कहानियाँ।

प्रकाशक – बोधि प्रकाशन, सी–४६, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रीयल एरिया एक्सटेंशन, नाला रोड़, २२ गोदाम, जयपुर ३०२००६ (राज.)

मूल्य ३९५/-

मेरी माटी मेरा देश

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार एवं बालवाटिका के यशस्वी संपादक डॉ. भेरूँलाल गर्ग के आत्मसंस्मरण।

प्रकाशक – दिल्ली पुस्तक सदन, ३०/३६, गली नं. ९, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली ११००३२

मूल्य ५५०/-

बिहार का हिन्दी बाल साहित्य

डॉ. दिनेश प्रसाद साह द्वारा बिहार के हिन्दी बाल साहित्य पर ज्ञानवर्धक शोध ग्रन्थ।

प्रकाशक –शब्द प्रकाशन, ए–२५, गणेश नगर, पाण्डव नगर काम्पलेक्स, नई दिल्ली ११००९२

मूल्य १००/-

गाते अक्षर खुशियों के स्वर

प्रसिद्ध बाल रचनाकार डॉ राकेश चक्र द्वारा रचित वर्णमाला के एक–एक अक्षर से आरंभ रोचक बाल कविताएँ।

प्रकाशक – ज्ञानगीता प्रकाशन, एफ–७ गली नं. १, पंचशील गार्डन एक्स., नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२

मूल्य २५०/-

डस्टबीन में पेड़

इन्जी. आशा शर्मा द्वारा रचित कम्प्यूटर बाजार, फास्टफूड जैसे आधुनिक बाल जीवन पर केन्द्रित २५ रोचक बोधक बाल कहानियाँ।

प्रकाशक – विकास प्रकाशन, जुबली नागरी भण्डार, स्टेशन रोड़, बीकानेर ३३४००१ (राज.)

मूल्य १५०/-

गज्जू की वापसी

इन्जी. आशा शर्मा द्वारा आज के परिवेश में हमारे आसपास उपस्थित उपेक्षित प्रायः पात्रों के साथ बुनी रोचक बाल कहानियाँ।

प्रकाशक – चित्रा प्रकाशन, २४२ सर्वधर्म कालोनी, सी–सेक्टर, कोलारा रोड़, भोपाल ४६२०४२ (म.प्र.)

छः अंगुल मुस्कान

● विष्णु प्रसाद चौहान

मोनू (बैंक मेनेजर से) – मुझे एक ज्वाइंट अकाउंट खुलवाना है।

बैंक मैनेजर – किसके साथ?

मोनू – जिसके अकाउंट में सबसे ज्यादा पैसा हो।

****

विद्यालय में जब पहली बार पता चला कि साइकोलॉजी की स्पेलिंग c से या s से नहीं बल्कि p से शुरु होती है। कसम से उसी दिन से अंग्रेजी से भरोसा टूट सा गया था।

****

पति – मुझे डायबिटीज हैं। डाक्टर ने मीठी चाय पीने से मना किया है।

पत्नी – अब मैं अलग–अलग चाय नहीं बनाऊंगी, लड्डू खा कर पी लेना, फीकी लगेगी।

*****

मरीज ने पर्ची दिखाकर डॉक्टर से पूछा– ''डॉ. साहब ये दवाई कैसे लेनी है?

डाक्टर ने गुस्से में कहा– पैसे देकर लेनी हैं।

*****

काकी– अरे सोनू, तुम बड़े हो गए

सोनू – हाँ काकी, मेरे पास और कोई विकल्प ही नहीं था।

● ढाबला हर्दू (म.प्र.)

आओ खेलें खेल

● चाँद मोहम्द घोसी

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

मच्छर बाबू

घटना भागलपुर की है। प्रसिद्ध उपन्यासकार श्रीशरत्चंद्र चटर्जी की भेंट मोहल्ले के डाकिये से हुई, तो उन्होंने पूछा, ''क्यों देवी मेरी कोई चिट्ठी है?'' डाकिये ने उत्तर दिया, ''जी नहीं, आपकी नहीं है। ... इधर मच्छर बाबू नाम के कोई नये आदमी आए हैं क्या मोहल्ले में? दो घण्टे से परेशान हूं खोजते-खोजते।'' शरत् बाबू ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, ''मच्छर बाबू?'' नहीं तो। बंगाली टोले में तो कोई नहीं है। दूसरे मोहल्ले में खोजो। क्या-क्या नाम रखते है लोग भी।''

शरत्बाबू की बात सुनकर डाकिये ने कहा, ''लेकिन हुजूर, हैं कोई बंगाली ही।'' शरत् बाबू ने चिट्ठी डाकिये के हाथ से देखने को ले ली, लेकिन तुरंत ही झेंपते हुए बोले, ''मेरी ही है।'' डाकिये ने अचम्भित हो कहा, ''तो आप ही मच्छर बाबू हैं?'' शरत् बाबू कट गए। बोले, ''यह समास का मामला है। नहीं समझोगे तुम।''

यह चिट्ठी शरत्बाबू के छोटे मामा विप्रदास गंगोपाध्याय ने पटना से भेजी थी और व्याकरण प्रेमी होने के कारण उन्होंने श्रीमत् शरच्चन्द्र को मिलाकर श्रीमच्छरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय लिख दिया था।

*****

मराठी के हँसोड़ लेखक आचार्य अत्रे से एक बार किसी ने पूछा, ''आप अपने श्रोताओं का ध्यान अपने भाषण में किस प्रकार लगाए रहते हैं?''

आचार्य अत्रे जरा मुस्कराए और फिर गम्भीर होकर बोले, ''मैं अपने भाषण का आरम्भ ही कुछ ऐसे ढंग से करता हूँ। एक उदाहरण दूँ आपको। भाषण के आरम्भ करने के पहले मैं कहूँगा 'सज्जनो! दुनियों में कौन सी दो वस्तुएं ऐसी हैं, जिनके लिए कम से कम आज का मध्यमवर्गीय मनुष्य जल्दी तैयार न होगा?'' स्वभावतः ही भीड़ से आवाज आएगी, मृत्यु, टैक्स, विवाह आदि।'' मैं तब मुस्कुराता हुआ कहूंगा, 'गलत, बिल्कुल गलत। बंधुओं! वे दो चीजें हैं, जुड़वा संतानें।''

अत्रे महोदय को आगे कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ी, प्रश्नकर्ता महोदय स्वयं उनकी यह बात सुनते ही दिल खोलकर हँस पड़े थे।

तिलचट्टा

कविता

श्रवण कुमार सेठ

चीनी की बोरी से चिपके
पहुँच गया कलकत्ता
बिछुड़ गया अपनी मैया से
बेचारा तिलचट्टा
दुद्धू सेठ के गोदाम में
पसरा था सन्नाटा
सारे तिलचट्टों ने छोड़ा
छूना चीनी आटा
कलकत्ते का हलवाई था
जिसका नाम मिठाई
फटी हुई बोरी को उसने
दुद्धू को लौटाई
झूम उठा खुशियों से, तिलचट्टे
ने आँसू पोछा
माँ की बातें ध्यान रखेगा, अब
उसने ऐसा सोचा
संग उसी बोरी से चिपके
तिलचट्टा घर आया
तिलचट्टे की बूढी माँ ने
उसको गले लगाया।

– लखनऊ (उ.प्र.)

हाल-बेहाल हुआ करोना से

आलेख

तितिक्षा जी वसावा

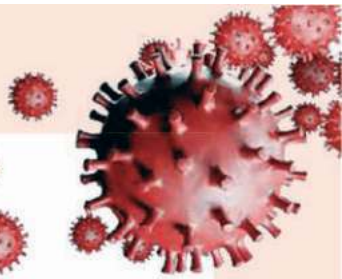

जिस प्रकार से पूरे विश्व में कोरोना फैल चुका है, इस विकट समस्या में सभी का हाल-बेहाल हुआ है। यह एक ऐसी कृत्रिम विपदा है, जो किसी ने कभी नहीं सोची थी, बस सब का जीवन, बड़ी ही सहजता से गुजर रहा था। उसमें अचानक कोरोना नाम का सूक्ष्म जीवाणु परदेस से आया, जिसने सब कुछ बिखेर दिया। बच्चों और बड़ों सभी के मन पर इसके कारण काफी खराब असर हुआ है। बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है कि, उन्हें वर्तमान की समस्याओं का सामना करने के लिए तैयार किया जाए। ऐसा करने पर ही वे भविष्य में नई आने वाली मुश्किलों का हल ढूंढने के लिए समर्थ हो सकेंगे। भले ही, आज का बच्चा यह जान चुका है कि कोरोना से बचने के लिए अत्यधिक सावधानी रखना पड़ेगी। किन्तु इस से सुरक्षित रहना नामुमकिन नहीं है, ये संभव हो सकता है। बस समाज में जागरूकता की आवश्यकता है। एक दूसरे से आवश्यक दूरी बनाए रखना, बार-बार हाथ धोने चाहिए और सभी ओर से स्वच्छता बनाएं रखने से ही इससे छुटकारा पाया जा सकता है। घर, परिवार और पूरा समाज अपने नैतिक कर्तव्यों का ध्यानपूर्वक पालन करे तो यह मुश्किल दौर सरलता से गुजर सकेगा।

पूरे देश में लॉकडाउन की वजह से बच्चों के विद्यालय बंद हो गए। पूरा वर्ष पढ़ने पर भी अधिकतर बच्चों को बिना परीक्षा के ही आगे की कक्षाओं में भेजा गया है। वर्तमान स्थिति में बच्चों की शिक्षा पर सबसे अधिक खराब प्रभाव पड़ा है। कुछ जगहों पर इंटरनेट के द्वारा बच्चों की परीक्षाएँ ली गई किन्तु सभी जगहों पर इंटरनेट उपलब्ध न हो पाने के कारण नुकसान होना तो स्वाभाविक ही है। जहाँ कहा जाता था कि बच्चों को टी.वी., मोबाईल, लेपटॉप जैसे इलेक्ट्रॉनिक साधनों से दूर रखना चाहिए, वहाँ आज इसी के सहारे उन्हें पढ़ने की नौबत आ गई है। बच्चे नहीं जानते कि लगातार ऑनलाइन पढ़ाई से और स्क्रीन से जुड़े रहने से आँखें खराब हो सकती है, साथ ही उनके दिमाग पर भी इसका दुष्प्रभाव होगा। आगे चलकर बच्चों में शारीरिक और मानसिक समस्याएँ बढ़ने की पूरी संभावनाएँ हैं। बड़े, सब कुछ जानने के पश्चात भी उन्हें इस प्रकार पढ़ाने के लिए, विवश हैं। अधिकतर लोगों के पास खाने-पीने की चीजों की कमी हो गई है, ऐसे में बच्चों को किस प्रकार ऑनलाइन पढ़ाई करवाएँ। कितने ही लोग दूर-दूर के गाँवों में चले गए हैं, जहाँ इंटरनेट का नेटवर्क भी नहीं जुड़ पाता। बच्चों की शिक्षा में काफी रुकावटें उत्पन्न हो गई हैं।

बच्चे यदि बाहर जाएं और पूरी सावधानी न रखे तो, उन्हें कोरोना के संक्रमण का खतरा हो जाता है और वे घर से पढ़ाई करें तो, मोबाईल या लैपटॉप जैसी स्क्रीन के सामने अधिक समय रहने से अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ होने का खतरा सदैव बना रहता है। बच्चे उद्यानों, खेलकूद के मैदानों में नहीं जा सकते हैं। छुट्टी होने के बावजूद भी नाना-नानी, दादा-दादी के घर या अन्य रिश्तेदारों के घर नहीं जा सकते, ना यात्राएँ कर सकते हैं और ना घूम-फिर सकते हैं। बस एक ही जगह पर फस गए हैं। इतनी विकट परिस्थिति है कि, यात्राएं बिलकुल असुरक्षित बन चुकी है। जब तक सब सही ना हो जाए, तब तक घर पर ही रहना, उचित रहेगा।

कोरोना महामारी के कारण जो लॉकडाउन किया गया, उसके कारण माता-पिता बच्चों को समय देने लगे हैं, उनके साथ खेल रहें हैं। इतना ही नहीं जो आज के आधुनिक बच्चे जो सदैव टी.वी., लैपटॉप या विडियोगेम में व्यस्त रहते थे, आज वे अपने माता-पिता के साथ पहले के खेल छुपम छुपी, घर-घर साँप-सीड़ी, केरम इत्यादि खेल रहें हैं। होटल और रेस्टोरेंट बंद होने के कारण सबको घर का पौष्टिक खाना मिल रहा है, फिर भी लोग घर पे रह कर उब गए हैं। समाज में आई हुई बिन बुलाई आपत्ति को झेलने के लिए सब को तैयार होना होगा क्योंकि उसका सही हल न मिलने तक, सब इस संकट में फसे रहेंगे।

• सूरत (गुजरात)

सचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

तारों का रंग और तापमान

रात के आकाश में अधिकतर तारे हमें चांदी से या सफेदी लिए से दिखते हैं जबकि वास्तविकता ये है कि सभी तारे एक-दूसरे से रंग में अंतर रखते हैं।

रंगों के जरिए ही हम एक तारे के बारे में यह जान सकते हैं कि वह किस उम्र का है? कितना युवा या कितना उम्रदराज है? और अभी वह अपनी आयु के किस दौर में चल रहा है?

रंगों से तारों की स्थिति और आयु यूं समझी जा सकती है कि जैसे एक नीला तारा है तो वह बेहद गर्म है, नया है अपने बचपन में है और उसके केंद्र में हाइड्रोजन भयानक अकल्पनीय नाभकीय ताकत से जल रही है।

तारे नीले, पीले, नारंगी, लाल और सफेद रंगों के होते हैं। अलग-अलग रंग के तारे, अलग-अलग तरह की ऊर्जा प्रवाहित करते हैं। नीले तारे, पराबैंगनी किरणों के जरिए ऊर्जा भेजते हैं।

रंगों के अनुसार तारों का सतही तापमान

- 50,000 डिग्री सेन्टीग्रेड
- 30,000 डिग्री सेन्टीग्रेड
- 10,000 डिग्री सेन्टीग्रेड
- 6,000 डिग्री सेन्टीग्रेड
- 4,000 डिग्री सेन्टीग्रेड
- 3,500 डिग्री सेन्टीग्रेड

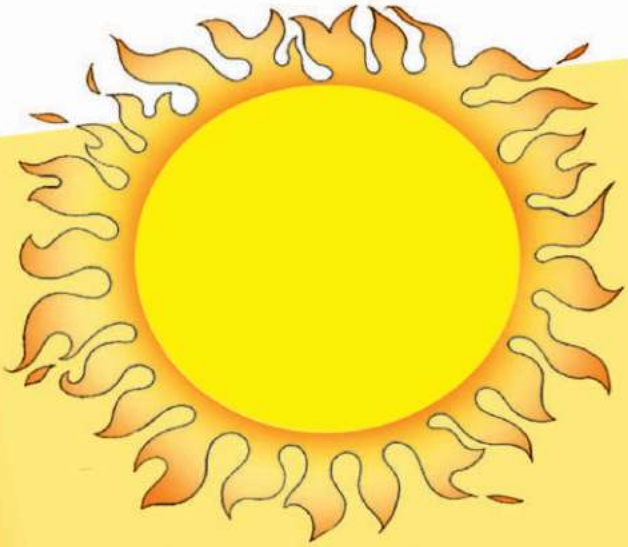

हमारा सूर्य पीला तारा है, जो अपनी आधी आयु पूरी कर चुका है, यानी सूर्य जितने वर्षों से कायम है उतने ही वर्षों अभी और कायम रहेगा।

सबसे बूढ़ा तारा

माना गया है कि आकाश गंगा में सबसे बूढ़ा और तारों के पूर्वजों का भी पूर्वज वृहद तारा है 'एच ई 107-5240' जो ब्रह्माण्ड की शुरुआत के समय का यानी करीब 13.7 बिलियन साल पुराना है। यह हम पृथ्वी वालों से 36,000 प्रकाश वर्ष दूर है।

समाप्त

चित्र पहेली

बच्चो, अपने देश से छोड़ गए इस उपग्रह को चंद्रमा पर पहुंचाओ।

● राजेश गुर्जर

कोरोना पंच

कविता

अरविन्द कुमार 'साहू'

कोरोना जी! हाथ जोड़कर
दूर से तुम्हें प्रमाण,
दुनिया भर को डरा रहा है।
आज तुम्हारा नाम।।
लेकिन मैं न होने दूँगा,
खाँसी और जुकाम।
मास्क लगाकर घूम रहा हूँ,
रोज सुबह और शाम।।
साथ सेनिटाइजर रखता,
नहीं मैं तुमसे डरता।।

● ऊँचाहार (उ.प्र.)

चित्र बनाओ...

● राजेश गुजर

बच्चो, खरगोश का चित्र
आसानी से बनाओ- रंग भरो।

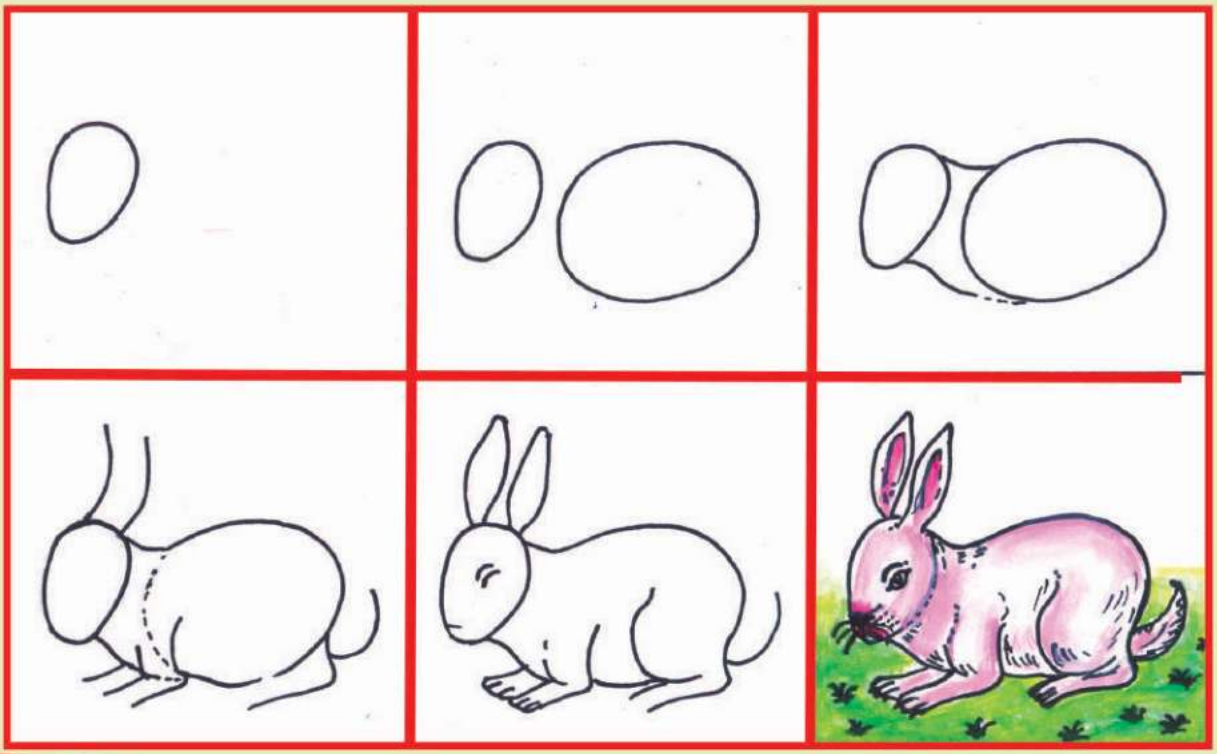

फूल नहीं जाते स्कूल

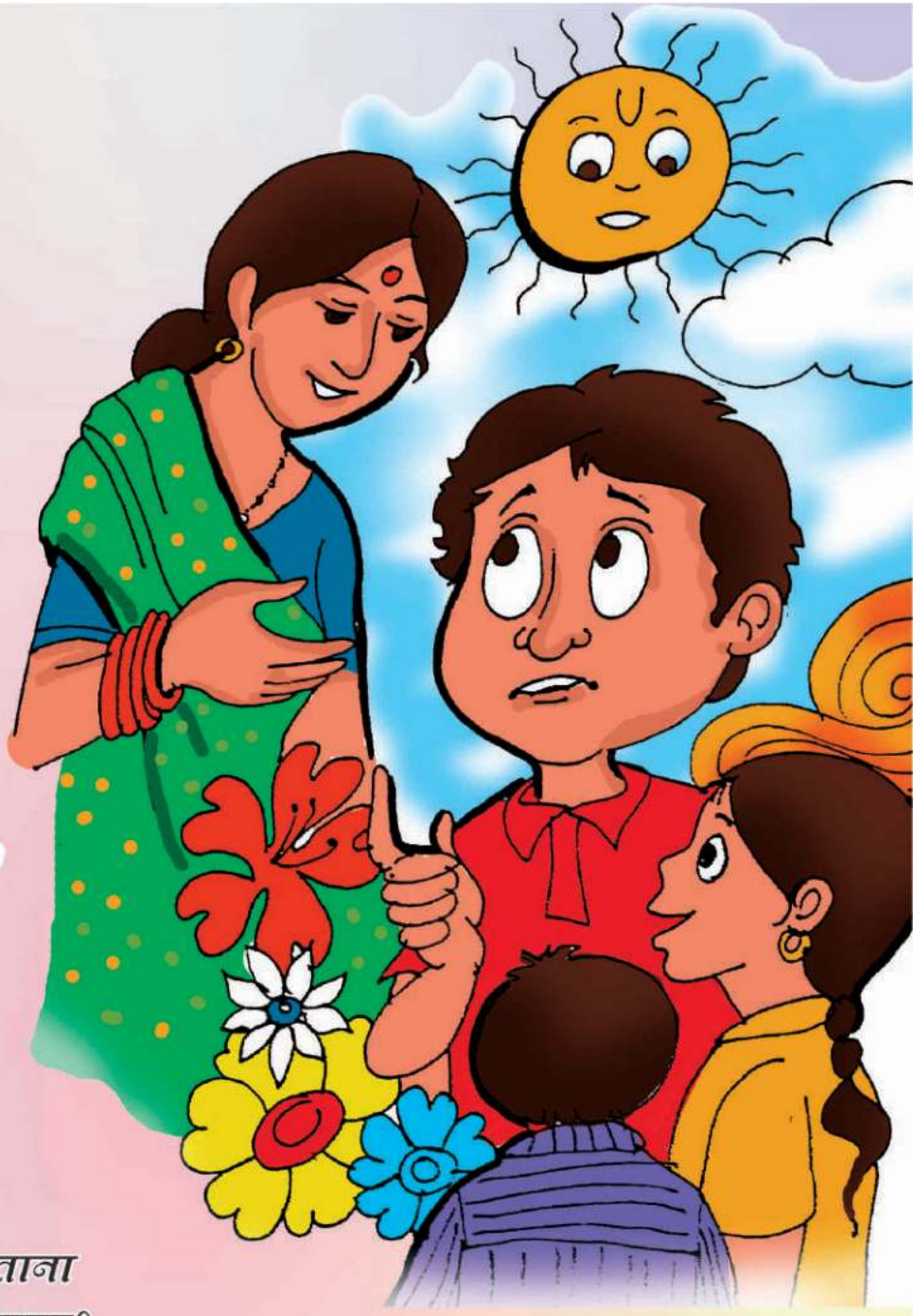

कविता

ज्योत्सना प्रदीप

माँ, माँ इक बात बताना
चंदा को क्यों कहते मामा?

अगर आपका हैं वो भाई
राखी उसने कब बंधवाई?

मामाजी तो घर पर आते
कितनी सारी चीजें लाते।

सूरज को क्यों कहते दादा?
सोनू, मोनू, रीता, राधा।

सूरज अंगारों का गोला
हॉफ-हॉफ कर, कब वो बोला?

दादाजी तो कितने बूढ़े
बिना दाँत के, चूसें पूड़े।

बच्चों को क्यो कहते हैं फूल
फूल नहीं जाते, कभी स्कूल।

● जालंधर (पंजाब)

बाहर बढ़ा कोरोना

देश बड़ा हो या हो छोटा,
सबको पड़ गया रोना.
सब घर के अंदर जा बैठे,
बाहर बढ़ा कोरोना.

जानलेवा वायरस से देखो,
सबकी शामत आई.
इससे मरने वालों का तो,
बढ़ा आंकड़ा भाई.

संक्रमण का जो हो खतरा,
डॉक्टर को बतलाओ.
सबको अपने से दूर रखो,
और क्वेरेंटाइन में जाओ.

दूरी से ही इस वायरस की,
चैन जल्द टूटेगी.
ये बीमारी दुनिया भर से,
तब ही दूर हटेगी.

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०६/२०२०
प्रेषण तिथि ३०/०६/२०२०
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना